हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

पण्डित लक्ष्मीपति सिंह, बी.ए.

प्रकाशक
पण्डित श्री रघुनाथ प्रसाद मिश्र
मैथिली हिन्दी प्रकाशन कार्यालय, अजमेर
अक्षय तृतीया, 1997 विक्रम संवत/ सन् 1940 ई.

हिन्दी-मैथिली शिक्षक के

लेखक - पं. श्री लक्ष्मीपति सिंह जी, बी.ए.

भूमिका लेखक
पं. श्री अमरनाथ झा जी, एम.ए.

प्रकाशक
पं. श्री रघुनाथ प्रसाद मिश्र 'पुरोहित'

भूमिका

मैथिली भाषा बहुत ही प्राचीन है और बहुत शताब्दियों से इसमें साहित्य विद्यमान है। ईसा के दसवीं शताब्दी से लेकर अब तक कोई भी समय ऐसा नहीं है जिसमें मैथिली के ग्रन्थ न लिखे गये हों। इसकी लिपि, इसकी भाषा, इसका पद्यनियम, सभी और भाषाओं से भिन्न हैं। तिरहुत के सभी वर्ण इस भाषा को बोलते और लिखते हैं। तिरहुत के बाहर के भी मैथिल इसको समझते हैं और यथाशक्ति बोलने का यत्न करते हैं। जब 1837 ईस्वी में कचहरियों से फारसी का बहिष्कार किया गया तब आशा की जा सकती थी कि प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति होगी। परन्तु शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने इन भाषाओं की ओर ध्यान नहीं दिया और पाठशालाओं और विद्यालयों में हिन्दी अथवा उर्दू को ही महत्त्व मिला। ब्रजभाषा तो साहित्यिक भाषा के रूप में समस्त उत्तरीय और पूर्वीय भारत में प्रचलित थी और इस से मैथिल भी अभिज्ञ थे। परन्तु खड़ी बोली तो मैथिलों के लिये कठिन थी और जितनी बंगालियों के लिये उतनी ही मैथिलों के लिये भी कठिन सिद्ध हुई। अब तो हिन्दी के उपासकों का मत यह है कि मैथिली कोई भाषा ही नहीं। उर्दू वाले भी तो यही कहते हैं कि हिन्दी कोई भाषा ही नहीं है।

हमें हिन्दी से प्रेम है, हम हिन्दी की दिनानुदिन उन्नति चाहते हैं। साथ ही इसके लिए उद्यत नहीं है कि हमारी मातृभाषा मृतभाषा हो के रहे, उसका अस्तित्व ही न रहे। हमारा साहित्य भंडार परिपूर्ण है, हमारी भाषा मधुर है, और सर्वथा प्रयास करेंगे कि इसकी वृद्धि हो।

सन्तोष का विषय है कि बाबू श्री लक्ष्मीपतिसिंह ने ऐसा उत्तम ग्रन्थ लिखा है। इससे बालकों का विशेषकर बड़ा उपकार होगा। मैं आशा करता हूँ कि इसका समुचित आदर शिक्षा विभाग में होगा और दूसरे संस्करण की शीघ्र आवश्यकता होगी।

दिनांक : 27. 04. 1940

श्री अमरनाथ झा

पूर्व पीठिका

गागर में सागर भरने की तो मुझमें बुद्धि नहीं, शक्ति नहीं, क्षमता नहीं अर्थात् मुझमें कोई ऐसी योग्यता नहीं है। किन्तु, फिर भी अपनी मातृभाषा मैथिली का हिन्दीभाषी समाज में प्रचार करने के लिए उत्सुक अपने अनन्य मित्र श्रीयुत पुरोहित जी के आग्रह की अवज्ञा भी मेरे लिए धृष्टता किम्वा कृतन्घता ही होती; अतएब साधनहीन रहता हुआ भी मैं केवल लब्धप्रतिष्ठ मैथिली के व्याकरणकारों की अक्षय सम्पत्ति से ही जहाँ-तहाँ सहायता लेकर इस प्रकार शिक्षक के प्रथम भाग के रूप में हिन्दी संसार की सेवा में सशङ्कित चित्त से सादर समर्पित कर रहा हूँ। अब यह प्रस्तुत भाग कैसा हुआ है, इस प्रसङ्ग तो मुझे कुछ कहने का भी अधिकार नहीं ! आपकी वस्तु आपके सामने है। साथ ही, प्रस्तुत भाग तो एक तरह से एक छोटी-मोटी प्रारम्भिक व्याकरण की ही पुस्तक हो चली है। अतएव, इसमें मेरी निजी मौलिकता कुछ नहीं के बराबर ही समझें ! मैथिली के मर्मज्ञ व्याकरणकार प्रो. श्री गङ्गापतिसिंहजी साहब बी.ए. द्वारा रचित ''मैथिली-बाल-व्याकरण'', पं. श्री हीरालाल झा जी ''हेम'' द्वारा रचित ''मैथिलीय भाषा व्याकरण भास्कर'' तथा मैथिली के अन्यान्य अधिकारी विद्वानों की रचनाओं से भी मुझे मैथिली व्याकरण की नियमोपनियमों के सङ्कलन-कार्य्य में जहाँ तहाँ सहायता मिल सकी हैं, अतएव मैं उक्त प्रोफेसर साहब, श्रीयुत् ''हेम'' जी तथा जिन किन्हीं लेखक महोदय की भी रचना से मुझे कुछ भी पथ-प्रदर्शन मिल सका है - उन सबों का ही चिरऋणी रहूँगा। हाँ, जगह-जगह पर उक्त व्याकरणकारों से मेरा भले ही मतभेद हो गया हो; किन्तु; मुझे पूर्ण आशा है कि मेरा कोई भी सिद्धान्त निमूर्ल अथवा मैथिली-साहित्य की साम्प्रतिक प्रगति के प्रतिकूल नहीं है। किसी भी भांषा का साहित्य गद्य में ही परिपक्व हो सकता है - यही भाषाविज्ञान का निर्विवाद सिद्धान्त है। अतएव किसी भी साहित्य के निर्माण किम्वा पुनर्निर्माण में पहले पद्य की ही चलती होती है। इधर इसी दृष्टिकोण से कितने अनभिज्ञ व्यक्ति मैथिली में प्राचीन गद्य-ग्रन्थों की कमी देख कर इसे आधुनिक भाषा मानने तक की भी गलती कर बैठते हैं। किन्तु, मैथिली की प्राचीनता निर्विवाद है। 8वीं शताब्दी तक मैथिली का पद्य-साहित्य परिपक्व हो चला था; और दसवीं शताब्दी में आकर मैथिली के गद्य-साहित्य का भी पूरा विकास हो चुका था; जिस प्रकाश की पराकाष्ठा 14वीं शताब्दी में लिखे गये ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्णरत्नाकर' नामक गद्यग्रन्थ में प्रत्यक्ष है। किन्तु, अत्युच्चैः

पतनम् ! यही सृष्टि का नियम है। मैथिल संस्कृत विद्वान् लोग गद्य की अपेक्षा पद्य में ही अधिक लिखने लगे; मैथिली को साहित्यक रूप देने के लिए संस्कृत की अवहेलना करना भी मानों वे लोग पाप समझते थे। फलतः आज हमें प्राचीन मैथिली-ग्रन्थों में जितने पद्यांश मिलतें हैं उतने गद्यांश नहीं। अधिक क्या? साधारणतया प्राचीन नाटकों में भी पद्यांश मैथिली में, और गद्यांश शुद्ध संस्कृत में ही पाये जाते हैं। इसी से सिद्ध हो जाता है कि मैथिली को संस्कृत से कैसा अनन्य सम्बन्ध आदिकाल से ही बना आ रहा है।

किन्तु, अब संस्कृत-मैथिली मिश्रित ग्रन्थ लिखने का न समय रहा है और न ऐसे ग्रन्थों को समझने की सर्वसाधारण कम पढ़े-लिखे व्यक्तियों की क्षमता। अतएव, हमें अब मैथिली की काया पलट करने की आवश्यकता है। इधर यद्यपि खड़ी-मैथिली में भी कवितायें लिखी जाने लगी है; तथापि पद्यात्मक कतिपय मैथिली शब्दों के प्रयोग हम अर्वाचीन मैथिली साहित्य में नहीं कर सकते हैं। विशेष एक अड़चन है बोलचाल की मैथिली में प्रान्तीय विभिन्नतायें। अतएव, इस अर्व्वाचीन मैथिली गद्य साहित्य की संस्कार-पद्धति में अभी मत-मतान्तरों का अस्तित्व भी अनिवार्य ही है ! किसी भी भाषा के पुनरुद्धार कार्य्य में इस प्रकार के मत-मतान्तर स्वाभाविक ही हो जाते हैं; अतएव मैथिली सीखने वालों को इन मत-मतान्तरों से निराश नहीं होना चाहिए! मुझे पूर्ण आशा है कि 'शिक्षक' के प्रथम भाग को अच्छी तरह से अद्योपान्त पढ़ जाने पर किसी भी हिन्दीभाषी को मैथिली व्याकरण का प्रारम्भिक यथावश्यक ज्ञान अवश्य हो ही जायगा; और यदि मेरी यह आशा आंशिक रूप में भी सफल होने पाई तो मैं "शिक्षक" के द्वितीय भाग को शुद्ध साहित्य के रूप देने की ही भरसक चेष्टा करूँगा भी, जिसके द्वारा मैथिली में पद्य रचना, पत्रलेखन कला, निबन्ध-प्रणाली; प्रसिद्ध लोकोक्ति आदि सभी साहित्यिक विषयों का यथावश्यक प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर हमारे पाठकगण शुद्ध मैथिली भाषा में लिखे व्याकरण साहित्यादि ग्रन्थों को भी स्वतन्त्र रूप से अध्ययन करने में समर्थ हो सकेंगे। विशेष, हिन्दी के माध्यम से मैथिली का विशेष प्रचार हो सके, इस दृष्टि से जहाँ तक समावेश हो सकेगा, मैं 'मैथिली-बन्धु' के द्वारा भी अपने पाठकों की सेवा करते रहने का प्रयत्न करूँगा ही। आशा है, 'शिक्षक के पाठकगण "मैथिली-बन्धु" से भी समुचित लाभ उठाने का अवश्य ही कष्ट उठाते जायँगे! एवमस्तु।

प्रसङ्गवश मैं प्रयाग विश्व-विद्यालय के वाइस चैन्सेलर मातृभाषा अनुरागी स्वनामधन्य श्रद्धेय श्रीयुत झाजी महोदय का चिरकृतज्ञ रहूँगा जिन्होंने इस 'शिक्षक'

जैसी क्षुद्र पुस्तंक की भूमिका लिखने का कष्ट उठाकर मुझे इस प्रकार प्रोत्साहित करने की कृपा की है !

विशेष नीर-क्षीर विवेकी विज्ञ अधिकारी विद्वत्समाज से मेरी यही सानुनय विनय है कि अनिवार्य कारणवश इस पुस्तक में जो कुछ भी त्रुटियाँ रह गई हों उनके लिये क्षमा करते हुए आगे के लिए मुझे समुचित पथ-प्रदर्शन प्रदान करने की कृपा करते जायँ।

विनीत

मधेपुर ड्योढ़ी, (दरभंगा) लेखक
ता. 05.05.1940 ई.

दो शब्द

भारतवर्ष के हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में मैथिली के प्रचार, और विशेषकर संयुक्त प्रान्तीय प्रवासी मैथिलों को अपनी मातृभाषा मैथिली के बोलचाल एवं पठन-पाठन में जो महान असुविधायें थीं वे ''हिन्दी के माध्यम में मैथिलीय व्याकरण'' के बिना, दूर होना अति कठिन थीं। भाषा की अनभिज्ञता के कारण कितने ही लोग अपभ्रंश एवं विकृत मैथिली का व्यवहार करने लगे। मैथिली के जो भी व्याकरण अबतक उपलब्ध थे, ''मैथिली के माध्यम'' में होने के कारण हिन्दी भाषा-भाषी जनता उनसे समुचित लाभ न उठा सकी; जिसके फलस्वरूप हिन्दी प्रान्तों में मैथिली-प्रचार की गति अवरुद्ध रह गई। खेद है, इसके मूल कारण की ओर मैथिली मर्मज्ञों का ध्यान अबतक आकर्षित नहीं हो सका। अस्तु,

''हिन्दी के माध्यम में मैथिलीय व्याकरण'' का अभाव मुझे बहुत अखर रहा था। इधर हमारे ''संयुक्त प्रान्तीय मैथिली ब्राह्मण महासभा'' के माननीय अधिकारियों तथा अन्य उत्साही बन्धुओं ने 'प्रकाशन कार्यालय, द्वारा एक ऐसे ग्रन्थ को प्रकाशित करने के लिये साग्रह उत्साहित किया। मुझे अति हर्ष है कि प्रिय बाबू श्री लक्ष्मीपतिसिंह जी से साग्रह यह ग्रन्थ रचवा कर मैथिली प्रचार की एक बड़ी कमी को दूर करने में ''प्रकाशन कार्यालय'' आज सफल हुआ है। इस ग्रन्थ से प्रवासी मैथिलों की कठिनाइयाँ तो दूर होंगी ही, साथ ही मैं आशा करता हूँ कि मैथिली को वैकल्पिक विषय की तरह-पढ़ने वाले विविध विश्वविद्यालयों के छात्रों को भी इससे काफी सहायता मिल सकती है।'

हम प्रयाग विश्वविद्यालय के वाइस-चान्सलर स्वनामधन्य श्रद्धेय पं. श्री अमरनाथ झा जी को शतशः धन्यवाद देते हैं कि जिन्होंने ''शिक्षक'' की भूमिका लिख कर हमें मातृभाषा की अधिकाधिक सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया है। आपकी इस कृपा के लिए 'कार्यालय' चिरकृतज्ञ है। आशा है हमारे यूनिवरसिटियों के सभी अधिकारी विद्यामहारथीगण इसे पाठ्यपुस्तक के रूप में स्थान देने की कृपा करेंगे, तो ''प्रकाशन कार्यालय'' अपना अहोभाग्य समझेगा ! एवमस्तु !!!

निवेदक

मैथिली-हिन्दी-प्रकाशन कार्यालय — श्री रघुनाथ प्रसाद मिश्र

अजमेर

अक्षय तृतीया 1997 वि.

* श्री जगदम्बायैनमः *

हिन्दी-मैथिली शिक्षक

प्रथम भाग

वर्णमाला परिचय

= ओ३म् सिद्धिरस्तु ॥

अकारादि अक्षरों से भी पहले मिथिला में सर्व प्रथम यही सिखलाया जाता है।

स्वर वर्ण

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ

ए ऐ ओ औ अं अः ॥

किन्तु व्यञ्जन में संयुक्त हो जाने पर मात्राओं के स्थान निम्न प्रकार बदल जाते हैं; जैसे:

क का कि की कु कू

के कै को कौ कं कः ॥

व्यञ्जन वर्ण

कवर्ग —	𑒏	𑒐	𑒑	𑒒	𑒓
	क	ख	ग	घ	ङ
चवर्ग —	𑒔	𑒕	𑒖	𑒗	𑒘
	च	छ	ज	झ	ञ
टवर्ग —	𑒙	𑒚	𑒛	𑒜	𑒝
	ट	ठ	ड	ढ	ण
तवर्ग —	𑒞	𑒟	𑒠	𑒡	𑒢
	त	थ	द	ध	न
पवर्ग —	𑒣	𑒤	𑒥	𑒦	𑒧
	प	फ	ब	भ	म
अन्तस्थ —	𑒨	𑒩 (𑒩)	𑒪	𑒫	
	य	र	ल	व	
ऊष्म —	𑒬	𑒭	𑒮	𑒯	
	श	ष	स	ह	

(कवर्ग से पवर्ग तक — स्पर्श)

मैथिली में कतिपय संयुक्ताक्षर निम्न रूप से लिखे जाते हैं:-

𑒏𑓂𑒭 = क्ष	𑒖𑓂𑒖 = ज्ज	𑒞𑒳 = तु
𑒞𑓂𑒩 = त्र	𑒭𑓂𑒣 = ष्प	𑒏𑓂𑒞 = क्त
𑒖𑓂𑒘 = ज्ञ	𑒏𑒵 = कृ	𑒞𑓂𑒞 = त्त
𑒏𑒳 = कु	𑒏𑓂𑒩 = क्र	𑒠𑓂𑒠 = द्द
𑒏𑓂𑒏 = क्क	𑒠𑓂𑒡 = द्ध	𑒓𑓂𑒏 = ङ्क
𑒓𑓂𑒑 = ङ्ग	𑒯𑓂𑒩𑒲 = ह्री	𑒞𑓂𑒫 = त्व
𑒩𑓂𑒑 = र्ग	𑒞𑓂𑒨 = त्य	𑒭𑓂𑒫 = ष्व
𑒯𑒳 = हु	𑒬𑓂𑒩𑒲𑓀 = श्रीं	𑒨𑒳 = यु
𑒝𑓂𑒙 = ण्ट	𑒮𑓂𑒫 = स्व	𑒭𑓂𑒙 = ष्ट
𑒝𑓂𑒚 = ण्ठ	𑒮𑒳 = सु	𑒅𑒞𑓂𑒮𑒳𑒏
𑒝𑓂𑒛 = ण्ड	𑒮𑓂𑒢 = स्न	उत्सुक
𑒝𑓂𑒝 = ण्ण	𑒦𑒵 = भृ	
𑒔𑓂𑒔 = च्च	𑒢𑓂𑒞𑒳 = न्तु	

एतदतिरिक्त उकार के लिये "७" चिह्न व्यवहार-कर अधिकतर व्यञ्जन में "ु" लगाकर ही मैथिली में काम चलाया जाता है। जैसे सु=स्, पु=प्, दु=द्-इत्यादि।

उपरोक्त संयुक्ताक्षरों को स्पष्ट बना ट

संयुक्त अक्षरों एवं मात्रादिकों के सन्निवेश में कुछ इतनी मौलिक विशिष्टता अक्सर पाई नहीं जाती; जैसे:-

इसी लिये आशा की जाती है कि धीरे धीरे हाथ बैठ जाने से सभी वर्ण न्यास स्वतः ठीक हो ही जावेंगे। हाँ, "ऽ" के स्थानापन्न मैथिली में "३", "त्" के स्थानापन्न "७", "म्" के स्थानापन्न "म्" का व्यवहार करना न भूलें!

अङ्क-संख्या-परिचय

सन्धि-प्रकरण

मैथिली में जो शब्द शुद्ध संस्कृत के व्यवहृत होते हैं, उन सबों में संस्कृत व्याकरण के अनुकूल ही स्वर-सन्धि, व्यञ्जन-सन्धि, तथा विसर्ग-सन्धि के सभी नियम स्वतः निभाये ही जाते हैं; किन्तु जो शब्द ठेठ मैथिली हैं उनमें सन्धि की प्रथा नहीं है। उदाहरणार्थ, मिथिला+ईश = मिथिलेश; मैथिली+उत्पत्ति = मैथिलोत्पत्ति; सत्+शास्त्र = सच्छात्र, वहिः+योग = वहिर्योग, आदि जैसे संस्कृत शब्द मैथिली में भी अविकल रूप से ही व्यवहृत होते है; किन्तु श्याम +औतह; भात+आनू को हम क्रमशः श्यामौताह; भातानू कथमपि नहीं कर सकते। इसलिये, हिन्दी तथा अन्यान्य प्रान्तीय भाषाओं की तरह मैथिली में भी लाये गये केवल संस्कृत शब्दों में ही सन्धि होती है। हाँ, जिन्हें मैथिली समझने की कुछ भी प्रारम्भिक योग्यता हो चुकी हो, भले ही प्रो. गङ्गापति सिंहजी रचित, "मैथिली बाल-व्याकरण" (प्राप्ति स्थान मैथिली साहित्य परिषद, लहेरियासराय दरभङ्गा) तथा श्रीयुत "हेम" विरचित "मैथिली भाषा-व्याकरण-भास्कर" (प्राप्ति स्थान:-कन्हैयालाल, कृष्णदास, श्री रमेश्वर प्रेस, दरभङ्गा) आदि व्याकरण ग्रन्थों को पढ़कर बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं।

शब्द विचार

मैथिली साहित्य बहुत प्राचीन है। इसकी उत्पत्ति ईस्वी सन की 8 वीं शताब्दी से ही स्पष्ट रूप से ही सिद्ध हो चुकी है। मागधी से मैथिली की उत्पत्ति और अर्द्ध-मागधी से प्राच्य हिन्दी की हुई है। इधर खड़ी बोली हिन्दी (पाश्चात्य हिन्दी) का जन्म तो बहुत दिन पीछे 14 वीं शताब्दी में हुआ सा सिद्ध हो रहा है। अतएव, मैथिली में मौलिक शब्द भण्डार हिन्दी से कहीं अधिक प्राचीन, स्वतन्त्र, तथा संस्कृतमय हैं। तथापि, ज्यों-ज्यों युग बदलते गये, मैथिली में भी अनेकों विदेशीय तथा प्रान्तीय भाषाओं के शब्द दिन पर दिन स्वीकृत होते ही जा रहे हैं; और आजकल संस्कृत के ऐसे कितने ही शुद्ध तथा अपभ्रंशात्मक शब्द हिन्दी और मैथिली में समान रूप से ही व्यवहार में लाये जा रहे हैं।

अब यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मैथिली में भी, हिन्दी की तरह ही, शब्द के दो भेद होते हैं; जैसे-सार्थक, और निरर्थक।

अब निरर्थक की तो बात ही नहीं, हाँ मैथिली में सार्थक शब्दों को हम तीन स्थूल भागों में बाँट सकते हैं; जैसे-

1. संज्ञा, 2. क्रिया, तथा 3. अव्यय।

अब यहाँ सर्वप्रथम संज्ञा की ही विवेचन की जाय।

संज्ञा के पहले तीन भेद किये गये हैं; यथा (1) रूढ़ि, (2) यौगिक, तथा (3) योगरूढ़िक। किन्तु, चूँकि, इन तीनों की विशिष्टताओं से हिन्दी-वैयाकरण स्वतः परिचित ही होंगे, यहाँ इस प्रसङ्ग कुछ लिखना भी व्यर्थ है।

किन्तु मैथिली के आवश्यक प्रयोगत्मक शब्दों से पाठकों का जानकारी कराने के लिये पुस्तक के प्रथम भाग के अन्त में मैथिली के व्यावहारिक शब्दों की सूची भी हिन्दी अर्थ सहित लगाई जा रहा है।

संज्ञा प्रकरण

मैथिली में संज्ञा के, हिन्दी के समान ही, पाँच भेद हैं-

1. व्यक्तिवाचक, यथा - मिथिला, मधेपुर, अजमेर, रघुनाथ।
2. जातिवाचक, यथा - विद्यार्थी, वानर, कुकुर (कुत्ता)
3. भाववाचक यथा - पुरुषत्व, सम्पादकत्व, मैथिलत्व
4. गुणवाचक यथा - हरियर (हरा), काऱी (काला), मैल (मैला), पापी (पाप करने वाला) ।
5. संज्ञा प्रतिनिधि, अथवा सर्वनामवाचक संज्ञा :- इसका स्पष्ट नाम 'सर्वनाम' ही समझें; जैसे- ''मैथिल बन्धु'' समस्त मैथिल समाजक वास्तविक बन्धु थीक, ओ कोनहुँ परिस्थितिमे अपन जातीय गौरवकेँ कलुषित होइत नहि देखि सकैछ (या सकैत अछि, या सकइत अछि) (हिन्दी-''मैथिल बन्धु'' समस्त मैथिल समाज का वास्तविक बन्धु है, वह किसी भी परिस्थिति में अपने जातीय गौरव को कलुषित होता नहीं देख सकता।) यहाँ-''ओ'' (वह) संज्ञा प्रतिनिधि है।

कारक प्रकरण

हिन्दी व्याकरण की तरह मैथिली व्याकरण में भी कारक के आठ भेद होते हैं; जैसे, 1. कर्त्ता, 2. कर्म, 3. करण, 4. सम्प्रदान, 5. अपादान, 6. सम्बन्ध, 7. अधिकरण, 8. सम्बोधन।

हिन्दी, तथा मैथिली में कारक प्रकरण के जितने नियम है, संस्कृत व्याकरण के ही आधार पर; अतएव उक्त आठों कारकों के प्रयोग में मैथिली तथा हिन्दी व्याकरणों के नियमोपनियमों में विशेष कुछ भेद नहीं। इसीलिये यहाँ नियमों पर व्यर्थ उद्धरण नहीं

कर, केवल ''विभक्ति-चिह्नों'' पर विचार किया जाता है।

कर्त्ता :- उदाहरण;

(1) राम जाइत छथि (हि. राम जाते हैं),

(2) राम जाइछ (हि. राम जाता है)

(3) राम गेल छलाह (राम गये थे),

(4) राम गेल छल (राम गया था),

(5) राम जयताह (या, जएताह, या जेताह) (हि. राम जायँ)

(6) राम जाएत (हिन्दी राम जाएगा)।

इन सभी वाक्यों में 'राम' कर्त्ता है। अतएव, यह स्पष्ट है कि मैथिली में कर्त्ता का कोई विभक्ति चिह्न नहीं है।

कर्म

इसके विभक्ति चिह्न 'केँ' तथा 'काँ' हैं (दूसरे का व्यवहार अर्व्वाचीन मैथिल साहित्य में बहुत कम होता जा रहा है)- जैसे,

अबोध नेना केँ मारबाक नहि चाही (हि. अबोध बच्चे को मारना नहीं चाहिए)- यहाँ 'केँ' कर्म चिह्न का द्योतक है।

कहीं-कहीं, हिन्दी की ही तरह, मैथिली में भी, खासकर क्षुद्र तथा अप्राणी वाचक शब्दों के बाद कर्म चिह्न का लोप ही कर दिया जाता है; जैसे-राति में दही जनु (नहिं) खाउ (हि. रात में दही मत खाइये)। यहाँ दही के बाद 'केँ' चिह्न नहीं लगया गया है।

करण

इसके चिन्ह 'सँ'- 'एँ'-'ञे' हैं।

श्रीकृष्णसँ शिशुपाल मारल गेल।(हि.श्रीकृष्ण से शिशुपाल मारा गया)।

बिना पुस्तकेँ ज्ञान नहि भय सकैछ (सकैत वा सकइत अछि)। (हि. बिना पुस्तक से ज्ञान नहीं हो सकता है)

यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि अगर अकारान्त संज्ञा रहे, तब तो 'अ' का लोप हो जाता है; जैसे ''पुस्तक'' के 'क' से 'अकार का'लोप होकर ''अ'' के स्थानापन्न 'एँ' लगकर ''पुस्तक'' (पुस्तक से) शब्द बन गया; मगर संज्ञा के अन्तिम अक्षर का अन्तस्वर 'अ' अथवा 'आ' को छोड़कर कुछ और ही रहे, तब समस्त शब्द के बाद ही

'एँ' अथवा 'जे' लगाया जाता है; जैसे माछीएँ (वा माछीजे) जे व्याधि नहि हो, सैह आश्चर्य)। प्रसङ्गवश, यहाँ यह सङ्केत भी आवश्यक प्रतीत होता है कि 'एँ' या 'जे' प्रत्यय के लगाने से कोई-कोई दीर्घ ईकारान्त शब्द को ह्रस्व इकारान्त, शब्द में भी परिणित कर दिया करते हैं; जैसे, माछीएँ (वा ञ), अथवा माछिजे (मख्वी) से पोथीएँ (वा जे) अथवा पोथिजे (पोथी से) इत्यादि।

कभी कभी 'सँ', 'एँ', या 'जे' करण का कोई भी चिह्न नहीं देकर केवल शब्द के बाद ''क द्वारा'' शब्द लगा कर ही करण का काम चला लिया जाता है; जैसा कि हिन्दी में भी अक्सर देखा जाता है। जैसे 'रामसँ' (राम से) नहीं लिखकर रामक द्वारा (राम के द्वारा) लङ्केश मारल गेलाह (लङ्केश मारे गये)।

सम्प्रदान

इसके चिन्ह ''केँ'' तथा ''काँ'' (विकल्पार्थ) हैं। यथाः- प्रवासी मैथिल-बन्धुगण केँ मैथिली बुझवा मे सहायता होन्हि, तैँ ई पुस्तक लिखल जाय रहल अछि। (हि. प्रवासी मैथिली-बन्धुगण को मैथिली समझने में सहायता हो, इसीलिये यह पुस्तक लिखी जा रही है)! श्री जगज्जननी जानकी जी काँ कोटिशः प्रणाम (हि. श्री जगज्जनी जानकी जी को कोटिशः प्रणाम)

तदर्थे, 'केँ' तथा 'काँ' नहीं लिखकर संज्ञा के बाद ''क हेतु'' का प्रयोग कर भी सम्प्रदान कारक का काम चल जाता है; जैसे 'धर्म के हेतु धन एकत्रित करना चाहिये, का मैथिली रूपान्तर ''धर्मक हेतु धन एकत्रित करक (वा करबाक) चाही।''

अपादान

इसके विभक्ति चिन्ह ''सँ'' है। जैसे वृक्षसँ फल खसैछ (वा खसैत अछि)। (हि. वृक्ष से फल गिरता है)।

सम्बन्ध

इसके विभक्ति चिन्ह ''क'' तथा ''केर'' हैं। जैसे मैथिल-बन्धुक (या केर) ग्राहक बनब प्रत्येक मैथिलक कर्त्तव्य थीक। (हि. मैथिल बन्धु का ग्राहक बनना प्रत्येक मैथिल का कर्त्तव्य है।)

अधिकरण

इसके विभक्ति चिन्ह ''मे'' तथा ''पर'' है। जैसे; कर्त्तव्य पालनमे संकोच करव उचित नहि (हि. कर्त्तव्य पालन में संकोच करना उचित नहीं) आमक गाछ पर वानर बैसल छल। (हि. आम के वृक्ष पर बन्दर बैठा था)।

सम्बोधन :- इसके चिन्ह निम्नलिखित हैंः-

(1) ''हे'' तथा 'अओ,'' (आदरसूचक पुलिङ्ग में इन दोनों का प्रयोग होता हैः- जैसे हे राम ! अओ राम !!

(2) हओ, ओ (अपने से न्यून, या प्रिय पात्र के लिये भी) हओ, बच्चा ! एना जनु करह (अर्थात्, ऐसा मत करो) हओ यार ! आब चुपचाप बैसि रहला सँ काज नहि चलतह (अरे ! यार ! अब चुपचाप बैठे रहने से काम नहीं चलेगा)।

(3) रे, रौ, रओ (अनादर सूचक, तथा पुँलिङ्ग में) रे पापी! रौ! मुसहरबा!! रओ! दुष्ट!!!

(4) हे, अए, यै- (आदर सूचक, स्त्रीलिङ्ग में) हे सखी! अए, कमले, यै दाइ!

(5) हए, गए, गै (अनादर सूचक, तथा अपने से न्यून या प्रिय स्त्रीलिङ्ग में) गए या गै खवासनी ! हए, सखी! गए, वा हए बेटी ! इत्यादि 2॥

(6) हा! हाय! अहा! अरे! इत्यादि शब्दों के प्रयोग मैथिली में भी हिन्दी के समान ही हुआ करते हैं; अतएव इस प्रसङ्ग कुछ अधिक लिखना भी व्यर्थ है।

शब्द रूप

मैथिली की शब्द रूपावली में एक खाश विशेषता यही है कि उसके सभी संज्ञात्मक शब्दों के रूप समान होते हैं - चाहे पुलिङ्ग हो या स्त्रीलिङ्ग; अकारान्त हो या औकारान्त। इसी लिये यहाँ केवल एक अकारान्त शब्द को ही सभी कारकों में दिखला कर यह प्रकरण समाप्त किया जाता है। उदाहरणार्थ बालक शब्द ही ले जिया जाय, जैसेः-

एक बचन	बहुबचन
(1) कर्त्ता—बालक..... (बालक)	(1) बालक लोकनि (बालक लोग) (2) बालक सभ (सभी बालक) (3) बालक सबहिं (सभी बालक)
(2) कर्म— बालक केँ, काँ... (बालक को)	(1) बालक लोकनि केँ,काँ (को-हिन्दी) (2) बालक सभकेँ, काँ (को हिन्दी) (3) बालक सबहिं केँ, काँ (को हिन्दी)
(3) करण - बालक सँ.... बालक से)	(1) बालक लोकनिसँ. बालकों से (हिन्दी) (2) बालक सभ सँ,

		(3) बालक सबहिं सँ
(4)	सम्प्रदान -बालककेँ,काँ (बालक के लिये)	(1) बा. लो. केँ, काँ बालकों के (2) बा. सभ केँ, काँ, लिये (हिन्दी) (3) बा. सबहिकेँ, काँ
(5)	अपादान- बालकसँ (बालक से)	(1) बालक लोकसँ बालकों से (2) बालक. सभ सँ (3) बालक सबहि सँ
(6)	सम्बन्धः बालक, केर (बालक का)	(1) बा. लो. क, केर बालकों का (2) बा. सभक, केर (हिन्दी) (3) बा. सबहिक, केर
7)	अधिकरणः बालकमे,पर (बालक में पर)	(1) बा.लो.मे, पर बालकों में पर (2) बा. सभमे, पर (हिन्दी) (3) बा. सबहिक मे, पर
(8)	सम्बोधन : हे!बालक (हे! बालक)	(1) हे! बा.लोकनि हे! बालकों (2) हे! बालक सभ (हिन्दी) (3) बा. सबहिं

कहीं कहीं ''लोकनि'', 'सभ', 'सबहि' में से कुछ भी नही लगाकर एक बचनान्त शब्द के बाद केवल 'गण' लगा कर ही काम चल जाता है, जैसे देवगण, बन्धुगण, स्त्रीगण।

लिङ्ग प्रकरण

मैथिली में तीन लिङ्ग हैं (1) पुँलिङ्ग (2) स्त्रीलिङ्ग (3) नपुंसक लिङ्ग।

इस प्रसङ्ग कितने विद्वानों में पारस्परिक मतान्तर होते आ रहे हैं-और उन लोगों का कहना है कि मैथिली में भी हिन्दी की तरह ही केवल दोही लिङ्ग हैं-(1) पुँलिङ्ग (2) स्त्रीलिङ्ग। ग्रिअर्सन साहब ने भी अपने मैथिली व्याकरण में केवल दोही लिङ्ग का उल्लेख किया है; मगर मैथिली-साहित्य की यथावश्यक खोज-वीन करने के बाद यह मानना ही पड़ेगा कि मैथिली में तीनों लिङ्गों का समावेश अनिवार्य है। स्थानाभाव के कारण मैं यहाँ मत मतान्तरों का खण्डन नहीं कर, केवल इतना ही लिख देना चाहता हूँ कि प्राणीवाचक शब्द पुँलिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग जो हों, मगर अप्राणीवाचक शब्द मात्र सदा नपुँसक ही रहा करता है।

पुँलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने की कुछ रीतियाँ :-

(1) संस्कृत अकारान्त पुँलिङ्ग शब्द के अन्तिम अक्षर के अन्तिम स्वर (अ) का 'ई' आदेश करने से साधारणतया स्त्रीलिङ्ग हो जाती हैः- जैसे-

पुँलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
शुद्र	शुद्री
देव	देवी
राक्षस	राक्षसी
किन्नर	किन्नरी

(2) कतिपय जातिवाचक संज्ञा, किन्तु खाशकर विशेषण में अन्तिम स्वर के 'ई' आदेश से स्त्रीलिङ्ग का रूप हो जाता है।

वाभन (ब्राह्मण)	वाभनि
ग्वार (ग्वाला)	ग्वारि
बुधियार (काविल)	बुधियारि
सुन्दर (सुन्दर)	सुन्दरि
अधलाह (खराब)	अधलाहि
मरखाह (मारनेबाला पशु)	मरखाहि
बिलाड़-विलाड़	बिलाड़ि
लिऔनिहार (लेजाने बाला)	लिऔनिहारि

(3) ब्राह्मण तथा अन्य जातियों के प्रचलित उपाधिबोधक शब्दों के अन्तिम अक्षर के स्वर का लोप कर ''आइन'' लगाकर स्त्रीलिङ्ग का रूप बनया जाता है। जैसेः-

मिश्र	मिश्राइन
ओझा	ओझाइन
ठाकुर	ठकुराइन
राउत	रउताइन
सदाय	सदाइन
मड़र	मड़राइन

(4) कितने जातिबोधक शब्दों में भी ''आइन'' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिङ्ग के रूप बनाये जाते हैंः-

पण्डित	पण्डिताइन
बनियाँ (दुकानदार)	बनिआइन
मोदी	मोदिआइन
नौआ (हजाम)	नौआइन
पण्डा	पण्डाइन

(6) 'जाति' तथा 'व्यापारी समुदाय' बोधक कितने शब्दों में 'इन' प्रत्यय लगाकर भी स्त्रीलिङ्ग का रूप बनता है:-

पुँ. मै.	पुँ.हि.	मै. स्त्री.
काएथ	(कायस्थ)	कैथिन
हेला	(हलालखोर)	हेलिन
डोम		डोमिन
योग	(योग्य, ब्राह्मण, विशेष)	योगिन
कोइर	(कोइरी)	कोइरिन
मलाह	(धोबी)	धोबिन
मलाह	(मछुआ)	मलाहिन
सोनार		सोनारिन
तेलि	(तेली)	तेलिन

(7) कतिपय जाति विशेष बोधक शब्दों को केवल 'नी' प्रत्यय से ही स्त्रीलिङ्ग का रूप दे दिया जाता है:-

राजपूत		राजपूतनी
केओट	(केवट)	केओटनी
कुजड़ा		कुजड़नी
दुसाध		दुसाधनी
मुसहर		मुसहरनी

अब यहाँ कुछ ऐसे-ऐसे शब्दों के उल्लेख किये जाते है जिन्हें पुँलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये, कोई खास नियम हैं ही नहीं, तथा जिन-जिन दो चार शब्दों के लिये भी एक अलग ही सूत्र है, जो साधारण विद्यार्थियों के लिये स्मरण रखना भी कठिन हो जाता है। कुछ ये हैं। जैसे:-

पिता (पिता)	माता
भाए (भाई)	बहिनि
गाय (गो)	बड़द, साँढ़
कुकुर, पिल्ला (कुत्ता)	पिल्ली
महिसा (महिसा)	महीस
चमार (चमार)	चमैन, दगरिन
कुम्हार (कुम्हार)	कुम्हइन
मूस (मूसा)	मुसरी
कमार (कमार)	कमैन
राजा (राजा)	रानी
ससुर (ससुर)	सासु
साहेब (साहब)	साहिबा, मेम
मींयाँ (मियाँ)	बीबी
गोंढ़ि (मछुआ)	गोढ़िनी
हाथी (हाथी)	हथनी
छागर (छाग)	पाठी
कौआ (कौवा)	कौवा
सुग्गा (शूक)	सुग्गी
पड़बा (कपोत)	पड़बी
बगड़ा (वगड़ा)	बगड़ी
मेना (मेना)	मेनी
मनसा(पुरुष)	माउग (स्त्री)
भेड़ा (भेंड़)	भेड़ी
बक्कर (बकड़ा)	बकरी
नर (पुलिङ्ग बोधक)	मेदिन (स्त्री बोधन)
बानर	बनरनी
नाग (साँप मै.) (हि.सर्प)	नागिन (साँप)
गृहस्थ	गिरिथाइन

ऊँट	उटनी
बाछा (बछड़ा)	बाछी
गबैया (संस्कृत हिन्दी मैथिली गायक)	गाइन
ओझा-गुनी (यन्त्र मन्त्र जानने वाला)	डाइन-योगिन
गोसाईं (भगवान)	गोसाउन (भगवती)
पुता (पुत्ता) (हिन्दी लड़का)	धीया (लड़की)
हरीन	हरिनी
घोड़ा	घोड़ी
वर (दुल्हा)	कनियाँ (दुलहिन)
किरपिन, (कृपणर)	किरपिनी
हिजरा	हिजरनी
बख्यो	बखौनी

साढ़ (साला)

1. सढ़होजि (साले की स्त्री)
2. साढ़ि (स्त्री की छोटी बहन)
3. जेठसासु (स्त्री की बड़ी बहन)

नोटः- पाठकों को मैथिली के यथावश्यक शब्दों से परिचित कराने के लिये पुस्तक के अन्त में शब्दावली दी ही जा चुकी है; इसीलिये यहाँ केवल उदाहरणार्थ कुछ शब्द दे दिये गये हैं! हाँ, लिङ्गानुशासन के प्रसङ्ग यहाँ पर यह लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है कि कितने विद्वान् मैथिली में, हिन्दी की तरह, अप्राणीवाचक शब्दों को पुँलिङ्ग अथवा स्त्रीलिङ्ग बनाने के पक्ष में रहते आये हैं। कतिपय प्राचीन ग्रन्थों में भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं; जैसे पुरनी पोखड़ि (पहले समय का पोखड़ा) मरखाहि नदी (डुबो कर मार देने वाली नदी) दूवरि देह (दुबली देह) इत्यादि 2; किन्तु फिर भी ''युवती पोखड़ि'' या ''दयावती नदी'' या ''मोटाइलि देह'' आदि के प्रयोग कहीं नहीं मिलते। अतएव उक्त प्रयोगों को साहित्यिक प्रयोग विशेष मान कर ही हमें सन्तोष कर लेना चाहिय। मेरी समझ में कष्ट कल्पना द्वारा हिन्दी की तरह 'पुस्तक' को स्त्रीलिङ्ग और ग्रन्थ को पुँलिङ्ग बनाकर मैथिली व्याकरण के लिङ्ग विचार को व्यर्थ क्लिष्टतर बनाने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है।

प्रसङ्गवश यहाँ कुछ ऐसे-ऐसे शब्दों के उल्लेख किये जाते हैं जिनके रूपों मे खास विशेषतायें पाई जाती हैं। जैसेः-

(1) भैँसुर (स्वामी का बड़ा भाई)

(2) भावहु (छोटे भाई की स्त्री)

(3) देअर (स्वामी का छोटा भाई)

(4) भाउज, भउजी, भौजी, बड़े भाई की स्त्री (किन्तु स्त्रियाँ अपने छोटे, या बड़े दोनों भाइयों की स्त्री को भउजी कह सकती हैं)।

(5) 'ननदि' (हि. ननद) का स्वामी 'ननदोसि' कहलाता है।

(6) स्त्रियाँ अपनी छोटी बहन के स्वामी को 'बहिनि जमाय'— अपनी बड़ी बहन के स्वामी को 'बहिनो' किन्तु, छोटी, या बड़ी दोनों बहनों के लड़के को बहिनौत, तथा लड़की को 'बहिनधी' कहती हैं।

(7) स्त्रियाँ अपने 'भैँसूर'' या 'देअर' की स्त्री को 'दियादनी', उसके लड़के को 'जाउत' और उसकी लड़की को 'जैधी' कहती हैं।

(8) स्त्रियाँ अपने स्वामी के चाचे (मैथिली पित्ती) को पितिया ससुर, अपने स्वामी की चाची (मैथिली पितिआइन) को पितिया सासु, अपने स्वामी के मामा (माम) को ममिया ससुर, तथा स्वामी की मामी (मैथिली मामि) को ममिया सासु कहती हैं। स्मरण रहे, पुरुष अपनी स्त्री के चाचे, या मामे को पितिया, या ममिया ससुर नहीं कहते।

अब मैथिली में भी, अङरेजी की ही तरह, कितने क्षुद्रप्राणीवाचक शब्द हैं जिनमें कोई लिङ्ग भेद नहीं माना जाता। जैसे, कीड़ा-मकौड़ा (कीड़े-मकौड़े) चुट्टी या चूटी (चीटी), गिरगिट् (पल्ली सं.) इत्यादि।

अब अन्य भाषाओं की तरह मैथिली में भी कितने ही ऐसे शब्द हैं जो दोनों लिङ्गों में समान रूप से ही व्यवहृत होते हैं। जैसेः- साप (सर्प), चड़ै-चुनमुनी (पक्षी-जाति बोधक), पड़रू (भैँस के बच्चे), नेरू (गौ के बच्चे), पठरू (बकरी के बच्चे), भनसिया (रसोई करने बाला या बाली), नेना (शिशु), मित्र (मित्र) इत्यादि।

जिस शब्दों का पुँलिङ्ग रूप हो ही नहीं सकता, उनमें से कुछ ये हैं। यथा - बाँझ (बन्ध्या), विधवा (विधवा), ऐहब (जिसका स्वामी जीता हो); विधिकरी (जो स्त्री विवाह के समय यथोचित विधि-विधान दुलहा-दुलहिन को सिखाती रहती है), खोदपाड़नी (जो गोदना गोदती है)।

ऐसे ही कितने शब्दों के स्त्रीलिङ्ग रूप भी नहीं होते; जैसे- हरबाह (हल चलाने

बाला); सिपाही (हिन्दी सिपाही), लठैत (लाठी चलाने बाला), मानिजन (ब्राह्मणेतर समाजों में जाति का मुखिया, जैसे- मिथिला में पाये जाते हैं), फनैत (ज्यादे उछल-कूद करने बाला, गुण्डा के भाव में इसका प्रयोग विशेषकर होता है), डकैत (डाकू), पमरिया (जन्मोत्सव में गाने बजाने वाला)।

नोट :- प्रसङ्गवश यहाँ यह लिखने की आवश्यकता नहीं है कि जमाना की रुख देखकर यदि अब स्त्रियाँ भी हल चलाने आदि पेशाओं को अपनाने लग गई, तो विवश होकर मैथिली साहित्य को भी हरबाहिन, सिपाहिन...आदि शब्दों का प्रयोग करना ही पड़ेगा; मगर इसमें देर मालूम पड़ती है।

वचन

मैथिली में केववल दो ही वचन हैं, एक वचन और बहुवचन

एक वचनान्त संज्ञा के अन्त में सब, सभ, सबहिं, लोकनि, गण, वृन्द, आदि प्रत्ययों में से किसी एक के ही प्रयोग से बहुवचन का बोध हो जाता है, जैसे, विद्यार्थी वृन्द; विद्यार्थी सभ, विद्यार्थी लोकनि, विद्यार्थी गण, विद्यार्थी सबहिं (बहुवचन)

इस प्रसङ्ग में और कोई विशेष नियम मुझे ज्ञात नहीं; तथा विशेष नियमों की आवश्यकता भी प्रतीत नहीं होती।

संज्ञा-विशेषण

गुणवाचक संज्ञा को विशेषण कहते हैं, और ऐसी संज्ञा के द्वारा जिसके गुण प्रगट किये जायँ उसे विशेष्य कहते हैं; जैसे - पापी राजा, सुन्दर कमल, बन्ध्या स्त्री आदि, इनमें पापी, सुन्दर, तथा बन्ध्या विशेषण और राजा, कमल, स्त्री विशेष्य हैं।

विशेषण के मुख्य भेद दो हैं, जैसे -

1. गुणबोधक :- सुन्दर कमल; लाल वस्त्र; शीतल पवन, आदि-आदि।

2. परिणामबोधक - इसके दो भेद हैं; (क) साधरण परिणाम बोधक, जैसे - कनेक पानि (हिन्दी थोड़ा पानी)

(ख) संख्या-बोधकः- पाँच व्यक्ति।

अब संख्या बोधक विशेषण के भी तीन भेद हैं, जैसेः-

1. निश्चित संख्या सूचक - तीनि, चारि, पाँच, सात।

2. अनुक्रमार्थक - तेसर (तीसरा), चारिम (चौथा), पहिल (पहला), दोसर (दूसरा),

पाँचम (पाँचवाँ), छट्ठम (छट्ठा), सातम (सातवाँ), आठम (आठवाँ), नवम (नववाँ), दशम (दशमा) इत्यादि।

3. आवृत्ति मूलक :- द्विगुण; दूगून (दोगुना), तेगुण, त्रिगुण (तेगुना), चौगुन, आदि

विशेषण के लिङ्ग, वचन, तथा कारक साधारणतया विशेष्य के अनुसार ही होते हैं। जैसेः- बुद्धिमान पुरुष, बुद्धिमती स्त्री आदि।

प्रसङ्गवश, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि संख्यावाचक विशेषण से विशेष्य के समाहारत्व का बोध करना हो, तो 'ओ' प्रत्यय विशेषण में लग जाता है, जैसे - आठ गोट (हिन्दी आठ अदत्) के बदले आठों का समाहारत्व बोध कराने के लिये 'आठो गोटे' का प्रयोग होगा। वैसे ही, एक गोट, से एको गोटे, दुइ गोट से दुइयो गोटे, तीन गोट से तीनू गोटे, या तीनओ गोटे का प्रयोग हो जाता है। इस प्रसङ्ग, निम्नलिखित नियमों पर ध्यान रखना आवश्यक है :- यथा;

1. यदि संख्यावाचक विशेषण शब्द के अन्त में इ, उ स्वर हो, तो इसका लोप नहीं होता, ''साठि गोटे'' का ''साठिओ गोटे'' हो जायगा।

2. संख्यावाचक अन्तिम एकार का ऐकार हो जाता है; जैसे - नब्बे (90) गोटे का 'नबैओ गोटे' सा रूप हो जायगा।

3. दुइ (दो), तीनि (तीन), चारि (चार), शब्द के समुच्चय में ''ओ'' नहीं लगा कर उसी अर्थ में, शब्द के अन्तिम स्वर का लोप कर 'दुइ' में ''हू'' या ''नू'' लगा दिया जाता है; और ''तीनि''-''चारि'' में 'ऊ' प्रत्ययः- जैसे- दुइओ के बदले 'दूहू'- 'दूनू' जैसे, तीनिओ के बदले 'तीनू'; तथा चारिओ के बदले ''चारू'' रूप हो जाते हैं।

4. वैसे ही यदि अधिक संख्या में से कुछ कम ही संख्या का बोध करवाना हो तो; ''दशमें दुइओ या तीनिओ व्यक्तिकेँ चलब आवश्यक (दशमें कमसे कम तीन व्यक्तियों का चलना आवश्यक है) अछि''- ऐसे वाक्य का प्रयोग करना पड़ेगा। अर्थात् इसके लिये भी 'ओ' का उपयोग किया जात है। साथ ही 'ए' का प्रयोग भी विकल्प से हुआ करता है; जैसे, साठिओ गोटे; या साठिए गोटे; पाँचों गोटे, या पाँचे गोटे इत्यादि-इत्यादि। कहने की आवश्यकता नहीं कि कितने विद्वान अभी तक भी 'ओ' के बदले 'यो' तथा ए. के बदले 'ये' का भी प्रयोग कर दिया करते हैं, यथा साठिये, साठिओ आदि।

खैर, अब इस प्रकरण को समाप्त करने से पूर्व यहाँ मैं कुछ ऐसे विशेषण का उल्लेख कर देना चाहता हूँ; जिनका अधिकतर बोलचाल में व्यवहार हुआ करता है। ये हैंः-

नीक (हिन्दी अच्छा), अधलाह (खराब), मोट (मोटा), पातर (पतला), पातरि (पतली), पैघ (बड़ा), बड़ (बहुत), छोट (छोटा), कारी, पीयर, उज्जर, लाल हरियर, बैगनी, (काला, पीला, उजला, लाल, हरा, बैजनी), कुण्डाबोर (खूब लाल), गोर (उजला), मामूली (साधारण), हल्लुक (हल्का), भारी (भारी), सोझ (सहल), टेढ़ (टेढ़ा), नाम (लम्बा), चाकर (चौड़ा), चापट (चिपटा), ऊँच (ऊचाँ), नीच (नीचा), नव (नवीन), पुरान (पुराना), कडू (कटु), पाकल (पका हुआ), काँच (कच्चा), औंटल (औंटा हुआ), रान्हल (रीन्हा हुआ), तीता (तीता), अम्मत (खट्टा), अतिखाइन (कुछ-कुछ कषाययुक्त तीता स्वाद), भभक (दुर्गन्धि), पनिगर (जलदार), अदना (महज मामूली), मैल (मैला), कचकुह (अवल), लौजा (मुलायम), साफ (स्वच्छ), वेकलेल (वेवकूफ, पुँलिङ्ग), बकलेलि (बेवकूफ; स्त्रीलिङ्ग), एक, दूइ (संख्यावाचक) इत्यादि-इत्यादि।

अब एक संज्ञा से दूसरी संज्ञा की आपेक्षिक न्यूनता दिखलाने के लिये, जिससे तुलना की जाय उसमें 'सँ' प्रत्यय (अपादान कारक का चिह्न) लगाया जाता है। जैसे, राम श्यामसँ तेज विद्यार्थी छथि (हिन्दी राम श्याम से तेज विद्यार्थी हैं); राम सबहिं विद्यार्थीसँ तेज छथि (हिन्दी - राम सभी विद्यार्थियों से तेज हैं)।

संस्कृत व्याकरण के अनुसार मैथिली में भी 'तर' एवं 'तम्' प्रत्यय का व्यवहार किया जाता है। जैसे, कोमल, कोमलतर (एक की अपेक्षा विशेष कोमल) कोमलतम (सबों से अधिक कोमल)। वैसे ही, अधिक, अधिकतर, अधिकतम; - श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम इत्यादि।

सर्वनाम

संज्ञा के प्रतिनिधि के रूप में जिसका व्यवहार हो, उसे सर्वनाम कहते हैं।
सर्वनाम के पाँच भेद हैं, जैसेः-

1. पुरुषवाचक सर्वनामः- हम(हम),अपने (आप), अहाँ(आप, तुम), तोँ(तुम, तू)।
2. निश्चयवाचक सर्वनाम :- ई (यह, ये), ओ (वह, वे)।
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम :- केओ, कियो, क्यो (कोई)।
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम :- के? (कौन)।
5. सम्बन्धवाचक सर्वनाम :- जे (जो); से (सो)।

पुरुष

पुरुष के तीन प्रभेद हैः-

1. प्रथम पुरुष :- हम जाइत छी, (मैं जाता हूँ), हम खाइति छी (मैं खाती हूँ),

हम टहलैत छी (हम टहलते हैं), आदि। इन तीनों में 'हम' प्रथम पुरुष हुआ।

2. मध्यम पुरुष :- अपने जाइत छी (आप जाते हैं); अहाँ जाइत छी (आप जाते हैं), तोँ जाइत छह (तुम जाते हो), तोँ जाइत छेँ (तू जाता है), अपने जाइति छी, अथवा अहाँ जाइति छी (आप जाती हैं) तोँ जाइति छह (तुम जाती हो) तोँ जाइत छेँ (तू जाती है)।
3. अन्य पुरुष :- रामकेँ दशरथ बनवास देल, सीता हुनक सङ्ग गेलथीन्हि (राम को दशरथ ने बनवास दिया; सीता उनके साथ गई); ओ बड़े प्रतिव्रता छलीहि (वह बड़ी प्रतिव्रता थी)। यहाँ 'राम', 'दशरथ', 'सीता' 'ओ' अन्य पुरुष हैं।

शब्द-रूप

(1) हम (उत्तम पुरुष)

एकवचन	बहुवचन
(1) कर्त्ताः- हम	1. हमरा लोकनि 2. हमरा सबहिं 3. हमरा सभ
(2) कर्मः- हमरा	हमरा (लोकनि केँ सबहिं केँ, सभ केँ) 'केँ' के बदले 'काँ' भी दिया जाता है।
(3) करण :- हमरा	हमरा लोकनि सब सँ
(4) सम्प्रदान :- हमरा	हमरा लोकनि सब केँ, काँ
(5) अपादान :- हमरा सँ	हमरा लोकनि सब सँ
(6) सम्बन्ध :- हमरा	हमरा लोकनिक, हमरा सभक, हमरा सबहिक

(7) अधिकरण :- हमरा मे, हमरापर, हमरा लोकनि, सभमे, पर,

मध्यम पुरुष

अपने (विशेष आदर सूचक) ''आप''

कर्त्ता - अपने (आप)	अपने लोकनि. सबहिं, सभ
कर्म - अपने केँ, काँ	अपने लोक, सबहिं केँ, काँ

करण - अपने सँ, अपनहिं	अपने लोक, सबहिं सँ
सम्प्रदान - अपने कें, काँ	अपने लोक, सबहिं कें, काँ
अपादान - अपने सँ	अपने लोक सबहिं सँ
सम्बन्ध - अपनेक	अपने लोकनिक, सभक,
अधिकरण - अपने मे, पर	अपने लोकनि मे, पर
अ(ञ) हाँ (हिन्दी आप)	समानता सूचक।
कर्त्ता- अहाँ (ञहाँ) (आप)	अहाँ (ञहाँ) लोकनि, सबहि, सभ
कर्म - अहाँ कें, काँ	अहाँ सब लोक कें, काँ
करण - अहाँ सँ	अहाँ लोक, सब सँ,
सम्प्रदान -अहाँ कें, काँ	अहाँ, लोक सबकें, काँ
अपादान - अहाँ सँ	अहाँ, लोक सबसँ
सम्बन्ध- अहाँक	अहाँ लोकनिक, सबहिक अहाँ सभक
अधिकरण - अहाँ मे, पर	अहाँ लोकनिक सभ मे, पर

तों (तुम, तू)

कर्त्ता - तों	तों सभ, तोहर सभ तोहरा, वा तोरा लोकनि
कर्म - तोहरा(तोरा)	तोहरा सभकें, काँ
करण - तोहरा सँ	तोहरा सभ सँ
सम्प्रदान - तोहरा	तोहरा सभकें, काँ
अपादान - तोहरा सँ	तोहरा सभ सँ
सम्बोधन - तोहर (तोर)	तोहरा सभक
अधिकरण- तोहरा मे, पर,	तोहरा सभमे, पर

नोट- जैसे ही 'अहाँ' के बदले प्राचीन मैथिली में 'ञहाँ' का प्रयोग अधिकतर पाया जाता है; वैसे ही बोल-चाल के ठेठ मैथिली में 'तोहर' के बदले ग्रामीण व्यक्ति 'तोर' शब्द ही का अधिकतर व्यवहार करते हैं, किन्त शुद्ध शब्द 'तोहर' ही है। 'तोहरा' मे सभ या लोकनि या सबहि किसी भी प्रत्यय से बहुवचन बनाया जा सकता है। ये तीनों प्रत्यय बहुवचन बनाने के लिये किसी भी संज्ञा या सर्वनाम में समान भाव ही से लगाये जाते हैं; इसीलिये आगे लिखे गये शब्दरूपों के वहुवचन में केवल एक मात्र प्रत्यय का

ही साङ्केतिक रूप से उल्लेख किया जाता है। उस 'सभ' के बदले यदि 'लोकनि' या 'सबहि' प्रत्यय ही लगा दिया जाय, तब भी कोई हर्ज नहीं। हाँ, अनादर सूचक शब्दों में अधिकतर 'सभ' का ही प्रयोग किया जाता है।

अन्य पुरुष

ई(ये) आदर सूचक

कर्त्ता- ई		ई लोकनि, हिनका लोकनि
कर्म-	हिनका	हिनका लोकनि कें, काँ
करण-	हिनका सँ	हिनका लोकनि सँ,
सम्प्रदान-	हिनका	हिनका लोकनि कें, काँ
अपादान -	हिनका सँ	हिनका लोकनि सँ
सम्बन्ध-	हिनक, हिनकर	हिनका लोकनिक
अधिकरण-	हिनका मे, पर	हिनका लोकनि मे, पर

ई(यह) अनादर सूचक

कर्त्ता- ई	ई सभ
कर्म - एकरा	एकरा सभ कें
करण- एकरा सँ	एकरा सभ सँ
सम्प्रदान- एकरा	एकरा सभ कें, काँ
अपादान- एकरा सँ	एकरा सभ सँ,
सम्बन्ध - एकर	एकरा सभक, सबहिक,
अधिकरण - एकरा मे, पर,	एकरा सभ मे, पर

ओ(वे) आदर सूचक

कर्त्ता- ओ	ओ लोकनि, हुनका लोकनि
कर्म- हुनका	हुनका लोकनि कें, काँ,
करण- हुनका	हुनका लोकनि सँ
सम्प्रदान- हुनका	हुनका लोकनि कें, काँ

अपादान - हुनका सँ	हुनका लोकनि सँ
सम्बन्ध- हुनक, हुनकर	हुनका लोकनिक
अधिकरण- हुनका मे, पर	हुनका लोकनि मे, पर

ओ (वह) अनादर सूचक

कर्त्ता- ओ	ओ सभ
कर्म- ओकरा	ओकरा सभ कें, काँ
करण - ओकरा सँ	ओकरा सभ सँ
सम्प्रदान - ओकरा	ओकरा सभ कें, काँ
अपादान - ओकरा सँ	ओकरा सभ सँ
सम्बन्ध - ओकर	ओकरा सभक
अधिकरण - ओकरा मे, पर	ओकरा सभ मे, पर

जे(जो) आदर सूचक

कर्त्ता- जे	जे लोकनि, जनिका लोकनि
कर्म- जनिका	जनिका लोकनि कें, काँ
करण- जनिका सँ	जनिका लोकनि सँ
सम्प्रदान- जनिका	जनिका लोकनि कें, काँ
अपादान- जनिका सँ	जनिका लोकनि सँ
सम्बन्ध- जनिक, जनिकर	जनिका लोकनिक
अधिकरण- जनिका मे, पर,	जनिका लोकनिमे, पर

जे (जो) अनादर सूचक

कर्त्ता- जे	जे सभ
कर्म- जकरा	जाहि सभे कें, जकरा सभकें
करण- जकरा सँ, जाहिसँ	जाहि सँ, जकरा सभकें, काँ
सम्प्रदान- जकरा	जाहि सँ, जकरा सभकें, काँ
अपादान- जकरासँ	जाहि सँ, जकरा सभसँ

सम्बन्ध - जकर	जाहि सँ, जकरा सभक
अधिकरण- जकरा मे, पर	जकरा सभमे, पर
जाहि मे, पर	जाहि सभमे, पर

नोटः- 'जाहि' शब्द का प्रयोग क्षुद्र, अथवा अप्राणीवाचक सर्वनाम में विशेष किया जाता है। आदर सूचक में 'जाहि' के बाद कुछ और शब्द लगा दिया जाता है, जैसे- 'जाहि व्यक्तिमे आत्मज्ञान छन्हि यथार्थ मनुष्य थिकाह।' (हि. जिस व्यक्ति में आत्मज्ञान है, वे ही यथार्थ मनुष्य है।)

से (सो) आदर सूचक

कर्त्ता- से	से सभ
कर्म- तकरा	तकरा सभकें, काँ, ताहिसभ कें, काँ
करण- तकरा सँ,	ताहि सँ तकरा सभसँ। ताहि सभ सँ
सम्प्रदान- तकरा	तकरा सभकें, काँ, ताहि सभ कें, काँ
अपादान- तकरा सँ, ताहिसँ।	तकरा सभसँ, ताहि सभसँ
सम्बन्ध- तकर	तकरा सभक, ताहि सभक
अधिकरण- तकरा मे, पर,	तकरा सभ मे, पर,
ताहि में	ताहि सभमे, पर

के (कौन) आदर सूचक

कर्त्ता- के	के लोकनि
कर्म- कनिका	कनिका लोकनि कें, काँ,
करण- कनिका सँ	कनिका लोकनि सँ
सम्प्रदान- कनिका	कनिका लोकनि कें, काँ
अपादान- कनिका सँ	कनिका लोकनि सँ

नोटः- 'जाहि' शब्द के, प्रयोग के समान ही 'ताहि' शब्द, अधिकतर अनादर भाव में अकेला, और आदर भाव में किसी संज्ञा से पहले व्यवहृत हुआ करता है। जैसे - जाहि हृदय मे आत्मसम्मान नहि, ताहि पर निष्ठा करब उचित नहि। (हि. जिस हृदय में आत्मसम्मान नहि, उस पर निष्ठा करना उचित नहीं)। जाहि पुरुषकें आत्मबल छन्हि,

ताहि व्यक्ति पर सबहिक श्रद्धा रहैत छन्हि (हिन्दी जिस पुरुष में आत्मबल है, उस (व्यक्ति) पर सबों की श्रद्धा रहती है)।

सम्बन्ध- कनिका, कनिकर,	कनिका लोकनिक
अधिकरण- कनिका मे, पर,	कनिका लोकनि मे, पर

के (कौन) अनादर सूचक

कर्त्ता- के	के सभ
कर्म- ककरा	ककरा सभकेँ, काँ
करण- ककरा सँ	ककरा सभ सँ
सम्प्रदान- ककरा	ककरा सभकेँ, काँ
अपादान- ककरा सँ	ककरा सभ सँ
सम्बन्ध- ककर	ककरा सभक
अधिकरण- ककरामे, पर	ककरा सभमे, पर

क्यो, (केओ, कियो) (हिन्दी कोई)

कर्त्ता - क्यो	क्यो लोकनि
कर्म - ककरहु,	ककरो
करण - ककरहु सँ,	ककरो सँ
सम्प्रदान - ककरहु,	ककरौ
अपादान - ककरहु सँ	ककरौ सँ
सम्बन्ध - ककरहु,	ककरो
अधिकरण- ककरौ मे, पर	ककरहु मे, पर

नोटः- कर्त्ता के अतिरिक्त अन्य कारकों में 'क्यों' शब्द का प्रयोग बहुवचन में भी एक वचन के समान ही रह जाता है।

किछु (कुछ)

एक वचन

1. कर्त्ता - किछु।
   कनेको
   कनिञो
2. कर्म - किछु
   कथू केँ

3. करण - कथू सँ, किछुओ सँ, कनेको सँ।
4. सम्प्रदान - कथू लै, कथूलय, किछुओ लय, कनेको लय।
5. अपादान - किछु सँ, किछुओ सँ, कनेको सँ, कनिञो सँ, कथू सँ।
6. सम्बन्ध - किछुलोक, कनेकोक, कथूक, कनिञोक
7. अधिकरण - किछुओ मे, कनिञो मे, कनेको मे, कथू मे।

हिन्दी में 'कुछ' की भाँति मैथिली मे भी 'किछु' के कितने विभिन्न प्रयोग हैं, जैसे- किछुओ कहू (कुछ भी कहिये)। अहाँ कथूक योग्य नहि छी (आप किसी भी लायक नहीं हैं)। केनको खाइ लय दीय (जरा भी खाने को दीजिये)! शीशी मे कनिञो (वा कनेको) तेल नहि अछि? (शीश में कुछ भी, अर्थात् जरा भी तेल नहीं है?) आदि। अतएव, 'किछु' शब्द के विभिन्न रूपों के विभिन्न प्रयोगों में सावधानता की जरूरत है।

साथ ही प्रश्नवाचक सर्वनाम के प्रसङ्ग यह भी ध्यान रखना है कि 'के' का प्रयोग प्राणीवाचक, तथा 'की' का प्रयोग अप्राणीवाचक या क्षुद्र जीव में होता है। जैसेः- (1) ई विद्यार्थी के थिकाह? (ये विद्यार्थी कौन हैं?) (2) ई बालिका के थिकीहि? (ये बालिका कौन हैं?) (3) अहाँक जेबी मे 'की' थीक; (आप की जेब में क्या है?) इत्यादि-इत्यादि।

यों तो हिन्दी के 'आप' शब्द का मैथिली में 'अहाँ' (ञहाँ) ''अपने'' दोनों हैं और दोनों का व्यवहार भी 'आप' शब्द के भाव में ही होता है, किन्तु मैथिली में समानता सूचक व्यक्ति में अहाँ (ञहाँ) और 'अपने' का प्रयोग विशिष्ट गुरु व्यक्तियों के लिये ही होता है। जैसेः-

(1) भाइ साहब ! अहाँ प्रतिज्ञा तँ कयने (कएने/ केने) छलहुँ जे एकहि सप्ताह मे चल आएब किन्तु गाम जइतहिं सभ प्रतिज्ञा बिसरि गेलहुँ (हिन्दी- भाई साहब! आपने प्रतिज्ञा तो की थी कि एक ही सप्ताह में चला आऊँगा मगर गाम जाते ही सभी प्रतिज्ञायें भूल गये।

(2) गुरुजी! अपने आशीर्वाद देल जाओ हम परीक्षामे अवश्य उत्तीर्ण भय (भै/ भए) जाएव (जायब/ जैब)। (हिन्दी- गुरुजी ! आप आशीर्वाद दें; हम परीक्षा में अवश्य उत्तीर्ण हो जायँगे)।

अब, जैसे हिन्दी में समानार्थ 'आप' शब्द का प्रयोग अन्य पुरुष में भी होता है; इसी प्रकार मैथिली में भी 'अपने' शब्द का प्रयोग होता है। जैसेः- श्री रामचन्द्रजी रघुकुलक दीपक छलाह, अपने साक्षात् विष्णुक अवतार छलाह (हिन्दी - श्री रामचन्द्रजी रघुकुल में दीपक थे; आप साक्षात् विष्णु के अवतार थे)। यहाँ ''अपने'' तथा 'आप' का प्रयोग समान भाव में ही किया गया है।

क्रिया-प्रकरण

हिन्दी के समान ही मैथिली में भी दो तरह की क्रियायें होती हैं; जैसे :-

(1) अकर्मक; उदाहरण, हम सूतइ (सुतैत, सूतइत) छी। (हिन्दी- मैं सोता हूँ), तथा

(2) सकर्मक; उहारण; हम ग्रन्थ पढ़इ (पढ़ैत, पढ़ै) छी। (हिन्दी - हम पुस्तक पढ़ते हैं)।

क्रिया धातु से काल तथा पुरुष के अनुसार प्रत्यय लगाने पर बनाई जाती है। इसके उदाहरण यथास्थान दिये ही जा रहे हैं। किन्तु यह सदा स्मरण रखने की बात है कि मैथिली में लिङ्गभेद से क्रिया के रूप में साधारणतया कोई परिवर्त्तन नहीं होता। जैसे, ''वह जाता है'', ''वह जाती है'', को इन दोनों में ''जाइत छी, वा जाइ छी'', के प्रयोग से ही काम चल जायगा। यथा - 'ओ जाइत वा जाइछथि'। किन्तु मैथिली में एक विशेषता यह है कि कर्त्ता तथा कर्म के आदर-अनादर भेद से क्रिया में बहुत कुछ परिवत्तर्न हो जाता है। उदाहरणार्थ; ओ ओकरा कहलक (उसने उससे कहा), ओ हुनका कहलन्हि (उन्होंने उनसे कहा), ओ तोरा कहलकौ (उसने तुझसे कहा), ओ अहाँ कें कहलन्हि (उसने अथवा उन्होंने आपसे कहा), हम तोरा कहलियौक (मैंने तुमसे कहा), हम अहाँकें कहलहुँ (मैंने आपसे कहा), हम ओकरा कहलियैक (मैंने उससे कहा) ओ तोरा कहलकौक (उसने तुझसे या तुमसे कहा), ओ अहाँ कें कहलन्हि (उसने आपसे कहा) इत्यादि-इत्यादि।

साथ ही सम्बन्धबोधक सर्वनाम पद के आदर-अनादर भेद से भी मैथिली के क्रियापदों में रूपान्तर हो जाता है; जैसे; ई हमर पुस्तक थीक (यह हमारी पुस्तक है); ई ओकर पुस्तक थिकैक (यह आपकी पुस्तक है), ई हिनकर पुस्तक थिकैन्ह या थिकन्हि (यह इनकी पुस्तक है) आदि।

एतदरिक्त एक बात ध्यान देने योग्य यह भी है कि मैथिली में वचन के भेद से क्रिया के रूप में साधारणतया कुछ अन्तर नहीं दीख पड़ता। जैसैः- राम जाइत छथि (राम जाते हैं)। राम, श्याम, लक्ष्मण सबहिं जाइत छथि (राम, श्याम, लक्ष्मण सभी जाते हैं) सीता जाइत (जाइ) छथि(सीता जाती है)।

किन्तु अर्वाचीन मैथिली साहित्य में भी कहीं कहीं लिङ्ग भेद से क्रिया में कुछ परिवर्त्तन कर देने का व्यवहार चल चला है; जैसे, राम जाइ (जाइत) छथि; (राम जाते हैं) किन्तु, सीता जाइ (जाइति) छथि (सीता जाती है) यहाँ, ''जाइत'' पुलिङ्ग में, तथा ''जाइति'' स्त्रीलिङ्ग में व्यवहृत हुआ है। जो हो मगर इसका व्यवहार बहुत कम देखा जाता है।

अब, क्रियाओं के भिन्न-भिन्न रूप, एवं उनके व्यवहारों के अन्यान्य नियमोपनियमों की विवेचना आगे के प्रकरणों में की जायगी; अतएव, यहाँ कुछ प्रमुख क्रियाओं की नामावली मात्र देकर दूसरा प्रकरण उठाया जा रहा है।

पढ़ब (पढ़ना), लिखब (लिखना), मेटाएब, मेटायब (मिटाना), देखब (देखना), सुनब (सुनना), खेलाएब, (खेलना; खेलाना), उठब(उठना), सूतब (सोना), जागब (जागना), बैसब, बइसब (बैठना), ओङ्घाएब (औंघना), झुकब (झुकना), धरब (रखना) चलब-फिरब (चलना-फिरना), दौड़ब-धूपब (दौड़ना-धूपना), कहब (कहना), बाजब (बोलना), जीतब (जीतना), हारब (हारना), कानब (रोना), सूझब (दीखना), हँसब (हँसना), टहलब (टहलना), रूसब (रुष्ट होना), बउँसब, बोधब (रूठे को मनाना), अगराएब (इठलाना), चिचिआएब (चिल्लाना), घिनाएब (घिनाना), चोराएब (चुराना), भोंकब (भेदना), घिसिआएब (घिसलाना), देब (देना), लेब (लेना), जानब (जानना), नाँचब (नाचना), रहब (रहना), तमसाएब (खिसलाना), इत्यादि-इत्यादि।

काल

मैथिली में भी काल के तीन भेद होते हैं, यथाः-

(1) वर्त्तमान :- हम जाइत छी (मैं जाता हूँ)

(2) भूत :- हम गेलहुँ (मैं गया)

(3) भविष्यत् :- हम जायव (जाएव) (मैं जाऊँगा)

वर्त्तमान

अब वर्त्तमान काल के तीन भेद हैं, यथाः-

1. सामान्य वर्त्तमान :- बिजुली छिटकैछ, वा छिटकैत अछि (बिजली छिटकती है)।
2. तात्कालिक वर्त्तमान :- बानर गाछकें दोमि रहल अछि। (बन्दर दरख्त को हिला रहा है)
3. सन्दिग्ध वर्त्तमान :- रघुनाथ बाबू अजमेरसँ सतबजी ट्रेनसँ विदा भय गेल होएताह। (रघुनाथ बाबू अजमेर से, सात बजे की ट्रेन से रवाना हो गये होंगे)।

भूत

भूतकाल के छः भेद हैं; यथाः-

1. समान्य भूतकाल :- ओ गेलाह (वे गये)।
2. आसन्न भूतकाल :- मैथिल-बन्धुक महासभांक प्रकाशित भय (भै, भ', भए) गेल अछि (मैथिल-बन्धु का महासभांक प्रकाशित हो चुका है)।
3. सन्दिग्ध भूतकाल :- कविवर जी 'गायन-संस्कार' नामक ग्रन्थ तैयार कय चुकल होएताह। (कविवर जी 'गायन-संस्कार' नाम का ग्रन्थ तैयार कर चुके होंगे)।
4. पूर्ण भूतकाल :- राम बाबू ई बात पहिनहि कहि चुकल छलाह (राम बाबू ने यह बात पहले ही कह दी थी)।
5. अपूर्ण भूतकाल :- ओ पुस्तक पढ़ैत छलाह (वे पुस्तक पढ़ रहे थे)।
6. हेतुहेतु मद्भूतकाल :- यदि हमरा समय पर पत्र पहुँचल रहैत तँ हम पत्रोत्तर देबा मे कथमपि बाज नहि अबितहुँ (यदि हमें समय पर पत्र पहुँचा रहता, तो हम पत्रोत्तर देने में कथमपि बाज नहीं आते)।

भविष्यत् काल

1. सामान्य भविष्यत कालः- लीला नैहर जयतीहि (जेतीहि वा जएतीहि वा जेतीह) (हिन्दी- लीला मायके जायँगी)
2. सम्भाव्य :- हम परसू एहि समय मे मधेपुर पहुँचल रहब (हम परसों इस वक्त मधेपुर पहुँचे रहेंगे)।

धातु रूपावली

धातु को क्रिया के रूप में लाने के लिये ''ब'', तथा 'यब' वा 'एब' का अधिकतर प्रयोग होता है। जैसे, 'पढ़' 'लिख' , सुन, मर आदि अकारान्त धातुओं में केवल 'ब' प्रत्यय लगाकर क्रिया का रूप दे दिया जात है; यथा पढ़ब, लिखब, सुनब, मरब। किन्तु आकारान्त धातु में 'यब' या 'एब' प्रत्यय का ही प्रयोग होता है; जैसे ''नहा+यब''= नहायब (स्नान करना)।

अब विविध लकारों में क्रिया के विभिन्न रूपों की चर्चा की जा रही है। यों तो मैथिली व्याकरण में इस प्रसङ्ग कितने ही नियमोपनियम हैं; किन्तु यहाँ पर केवल कुछ ऐसे ही प्रमुख नियमों पर प्रकाश डाल जा रहा है; जिन से धातु रूपावली का काम चलाने लायक साधारण ज्ञान हो जाय। ये हैं-

सामान्य वर्त्तमान

यह तो पहले ही कहा जा चुका है कि वचनानुसार क्रिया की साधनिका में कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं होता। केवल धातु के बाद 'इ' वा 'इत' और बाद इसके 'छी' प्रत्यय लगा देने से उत्तम पुरुष, तथा आदर सूचक मध्यम पुरुष के लिये सामान्य वर्त्तमान-कालिक क्रिया बन जाती है; जैसे, सुन+इ (वा इत)+छी = सुनइ (त) छी। अब इसी सुन +इ (वा इत)+छी = सुनइत (त) में 'छी' नहीं लगाकर 'छह' लगा देने से अनादर सूचक मध्यम पुरुष का पहला रूप 'सुनइ छह'; तथा 'छेँ' लगाने से उसी का दूसरा रूप बन जाता है। उदारहणार्थः-

उत्तम पुरुष

एकवचन	बहुवचन
हम सुनइ (त) छी।	हमरा लोकनि सुनइ(त) छी

मध्यम पुरुष

(आदर सूचक)

अपने	सुनइ (त) छी।अपने लोकनि सुनइ(त)
अहाँ	अहाँ लोकनि छी।

मध्यम पुरुष

(अनादर सूचक)

तोँ सुनइ (त) छह।	तोहरा सभ सुनइ छह।
तोँ सुनइ (त) छेँ।	तो सभ सुनइ छेँ।

अन्य पुरुष

(आदर)

ओ सुनइ (त) छथि।	ओ (हुनका) लोकनि सुनइ (त) छथि।

(अनादर)

ओ सुनइ अछि।	ओसभ सुनइ (त) अछि।

यहाँ, यह भी एक बात ध्यान देने योग्य है कि ग्राम्य भाषा में 'सुनइ', 'सुनइत'

जैसे प्रयोग के बदले केवल ''सुनै'' लिख कर ही काम चला लिया जाता है; जैसे - सुनै छथि (सुनते हैं), कहै (कहइ) छथि, (कहते हैं), पढ़ै (पढ़इ, वा पढ़इत) छथि (पढ़ते हैं) इत्यादि। सारांश, धातु में 'इत' या 'इ' नहीं लगाकर केवल धातु के अकारान्त अक्षर को ऐकारान्त रूप कर दिया जाता है। किन्तु, मैं जहाँ तक सोचता हूँ साहित्यिक मैथिली में ऐसा प्रयोग करना उचित नहीं।

अब उपरोक्त नियम के भी कुछ अपवाद ये हैं कि यदि किसी धातु का प्रथम वर्ण आकारान्त हो तो, उस धातु को किसी रूप में परिवर्त्तित करने से पहले ही ''ओ'' के स्थान पर 'अ' रख दें। जैसे - बाज(बोलना), से 'बजइत'- आन (लाना) से 'अनइत', कान (रोना) से 'कनइत', 'फान(कूदना) से 'फनइत', भान (बोलना) से 'भनइत'। मगर, फिर कितने ऐसे भी शब्द हैं जिनमें यह नियम लागू नहीं होता; जैसे; जा (जाना) से 'जाइत', खा (खाना) से 'खाइत', मान (मानना) से 'मानइत', 'मानैत', 'मानइ', आदि-आदि।

तात्कालिक वर्त्तमान

धातु के पूर्वकालिक क्रिया के बाद 'रह' (रहना) धातु के सामान्यभूत का रूप लगाकर, 'छी', 'छह', 'छैँ' आदि प्रत्यय के प्रयोग से तात्कालिक वर्त्तमान का रूप बनाया जाता है। जैसेः 'पढ़' (पढ़ना), धातु से पूर्वकालिक क्रिया का रूप 'पढ़ि' हुआ। अब 'पढ़ि' के आगे 'रह' (रहना) धातु के सामान्य भूत का रूप 'रहल' लगा कर 'पढ़ि रहल' रूप बन गया। अब इस 'पढ़ि रहल' (पढ़ रहा) के आगे ' छी', 'छथि', 'अछि', 'छह', 'छैँ'आदि। कोई भी यथावश्यक प्रत्यय लगाकर तात्कालिक वर्त्तमान का रूप बना सकते हैं।

उदाहरणार्थः- उत्तम पुरुष - हम जाय रहल छी (मैं जा रही हूँ),
मध्यम पुरुष (आदर) अपने, अहाँ जाय रहल छी। (आप जा रहे हैं),
मध्यम पुरुष (अनादर) तोँ जाय रहल छह। (तुम जा रहे हो),
तोँ जाय रहल 'छैँ'। (तू जा रहा है)।

सन्दिग्ध वर्त्तमान

धातु के क्रियाद्योतक (रूप यथा 'सुन' धातु से 'सुनइत') के बाद 'हो' (होना) धातु के भविष्यत काल के पुरुषानुसार रूप लगाकर सन्दिग्ध वर्त्तमान के विभिन्न रूप बनाये जाते हैं। उदाहरणार्थ :-

उ. पुरुष- भय सकैछ, हम झुकैत होएब। (हो सकता है, हम झुकते(ओँघते) होंगे।
मध्यम पुरुष (आदर) अहाँ, वा, अपने झुकैत होएब।

मध्यम पुरुष (अनादर) - 1. तोँ झुकैत होएबह। 2. तोँ झुकैत होएबें।
अन्य पुरुष (आदर) - ओ झुकैत होएताह।
अन्य पुरुष (अनादर) - ओ झुकैत होएत।
(नोट :- झुकइत, झुकइ, वा झुकैत, तीनों का व्यवहार है)

सामान्यभूत

धातु के बाद पुँलिङ्गार्थ में 'ल' वा 'लहुँ' (उत्तम पुरुष एवं आदरणीय मध्यम पुरुष में), और 'लि' स्त्रीलिङ्ग में लगाया जाता है। एतद्‌रिक्त पुरुषानुसार 'लह', 'लनि', 'ले' प्रत्यय के प्रयोग से भी सामान्य भूत के विविध रूप बनाये जाते हैं। उदाहरणार्थः-

उत्तम पुरुष - हम सुनल, वा सुनलहुँ (सुना)।
मध्यम पुरुष- 1. अपने, अहाँ सुनलहुँ।
2. तोँ सुनलह।
3. तोँ सुनलें।
अन्य पुरुष- 1. ओ सुनलन्हि।
2. ओ सुनलक।

किन्तु कतिपय धातुओं से सामान्य भूत के रूप कुछ और ही बन जाते हैं।

जैसे :- 'कर' (करना) धातु से 'कयलहुँ' (किया)। 'धर' (रखना) धातु से धयलहुँ (रखा)। 'हो' (होना) धातु से भेलहुँ (हुआ)। 'खा' (खाना) धातु से खेलहुँ (खाया); 'पिब' (पिया) धातु से पीलहुँ; 'द' (देना) धातु से देलहुँ; 'ल' (लेना) धातु से लेलहुँ; 'अब' (आना) धातु से अयलहुँ ; मर (मरना) धातु से मुइलहुँ। अब इन रूपों में भी पुरुषानुसार यथावश्यक विभिन्नतायें हो जाती हैं। जैसे, 'कयल', 'कयलहुँ', 'कयलह', 'कयलें', 'कयलन्हि', 'कयलक'; मुइल, मुइलाह, मुइलि आदि-आदि।

नोट - लिङ्गभेद से तो कोई भेद होता ही नहीं। केवल एकवचन से बहुवचन बनाने में यहाँ भी 'लोकनि', या 'सभ' का प्रयोग किया जाता है।

आसन्नभूत

धातु के सामान्य भूत के रूप के बाद केवल ''अछि'' लगा देने से ही काम चल जाता है; जैसे :-

हम पढ़लहुँ अछि (मैंने पढ़ा है)।

अपने, अहाँ पढ़लहुँ अछि (आपने पढ़ा है)।

तोँ पढ़लह अछि (तुमने पढ़ा है)।

तोँ पढ़लेँ हें (तूँ ने पढ़ा है)।

ओ पढ़लन्हि अछि (उन्होंने पढ़ा है)।

ओ पढ़लक अछि (उसने पढ़ा है)।

पूर्णभूत

पूर्णभूत बनाने के प्रधान तीन साधारण नियम हैं। एक तो धातु के बाद 'ने' और फिर उसके बाद 'हो' धातु के 'छलहुँ' आदि। (सामान्य भूत के अनान्य रूप) लगा देने से पूर्णभूत के रूप बन जाते हैं। जैसे- पढ़+ने+छलहुँ = पढ़ने छलहुँ; हँस+ने+छलहुँ = हँसने छलहुँ (पढ़ा था; हँसा था) आदि-आदि।

कभी-कभी पूर्णकालिक क्रिया के रूप के बाद 'ने', और उसके बाद 'छलहुँ' आदि प्रत्यय से भी पूर्णभूत के रूप बनाये जाते हैं। जैसेः- 'कर' (करना) धातु का पूर्वकालिक रूप ''कय'' हुआ; अब 'कय' के बाद 'ने' और उसके बाद फिर ''छलहुँ'' लगाने से ''कयने छलहुँ'' पूर्णभूत का रूप बन गया।

कतिपय धातुओं से पूर्णभूत के रूप बनाने के लिये केवल उनके सामान्यभूत के रूपों में ''छलहुँ'' आदि प्रत्यय लगा दिये जाते हैं। जैसे, गेल छलाह (गये थे) आएल छलहुँ (आये थे, - हम, या आप आये थे)।

अब 'पढ़' धातु के हम लोग विभिन्न पुरुषों में इस प्रकार प्रयोग कर सकते हैं; जैसेः-

उत्तम पुरुष - हम पढ़ने छलहुँ। (मैंने पढ़ा था)।

मध्यम पुरुष- 1. अपने/अहाँ पढ़ने छलहुँ। (आपने पढ़ा था)।
2. तोँपड़ने छलाह। (तुमने पढ़ा था)
3. तोँपढ़ने छलेँ। (तुमने पढ़ा था)।

अन्य पुरुष - 1. ओ पढ़ने छलाह (उन्होंने पढ़ा था)।
2. ओ पढ़ने छल। (उसने पढ़ा था)।

अपूर्णभूत

धातु के क्रियाद्योतक रूप के बाद 'हो' धातु के 'छलहुँ' आदि प्रत्यय के लगाने से अपूर्णभूत के रूप बनाये जाते हैं। जैसेः-

उत्तम पुरुष :- हम पढ़इत (पढ़+इत) छलहुँ (मैं पढ़ रहा था)।

मध्यम पुरुष :- 1. अपने/अहाँ पढ़इत (पढ़ैत) छलहुँ।
2. तोँ पढ़इत (पढ़ैत) छलाह।
3. तोँपढ़इत (पढ़ैत छलें)।

अन्य पुरुष :- 1. ओ पढ़इत छलाह।
2. ओ पढ़ैत छल।

नोट : स्त्रीलिङ्ग में धातु के आगे 'इत' के बदले 'इति' लगाया जाता है। जैसेः ओ पढ़इति (पढ़ैति) छलीहि (वह पढ़ रही थी)।

सन्दिग्धभूत

धातु के आगे 'ने' और उसके बाद 'हो' (होना) धातु के सामान्य भविष्यत् के पुरुषानुसार यथाावश्यक रूप लगाने से सन्दिग्ध भूत के तत्तत् रूप लगाने से सन्दिग्ध भूत के तत्तत् रूप बनाये जाते हैं; जैसे- सुन+ने+होएब = सुनने होएब (सुना होगा) इत्यादि। किन्ही-किन्हीं धातुओं के सामान्यभूत के रूप के आगे 'हो' धातु के सामान्य भविष्यत् के रूप लगाने से भी सन्दिग्धभूत के रूप बनाये जाते हैं। जैसे - आ+एल+होएब = आएल होएब (आये होंगे)। गेल होएब (गये होंगे)। इत्यादि-इत्यादि। अतएव सन्दिग्धभूत के विविध रूप इस प्रकार से दिये जा रहे हैं। जैसेः-

उत्तम पुरुष - हम पढ़ने होएब (मैंने पढ़ा होगा)।

मध्यम पुरुष- 1. अपने या अहाँ पढ़ने होएब।
2. तोँपढ़ने होएह (हयबह)।
3. तोँपढ़ने होएबेँ (हयबेँ)।

अन्य पुरुष- 1. ओ पढ़ने होएताह (हयताह)।
2. ओ पढ़ने होएत (हयत)।

नोटः- स्त्रीलिङ्ग के अन्य पुरुष में 'होएताह' के बदले 'होएतीहि'; 'होएत' के बदले 'होएति' के प्रयोग होते हैं।

अपवाद- 'द' (देना) धातु से देने होएब, 'ल' (लेना) से लेने होएब; पिब (पीना) से पीने होएब, आदि कतिपय इने-गिने धातुओं को सन्दिग्ध भूतकालिक रूप देने में उपरोक्त नियम लागू नहीं होते।

हेतुहेतुमद्भूत

अकारान्त धातु के अन्तिम अक्षर के अन्त स्वर का लोप कर उसमें ह्स्व 'ई' लगाकर; आकारान्त धातु के 'आ' का 'अ' आदेश कर 'इ' लगाने से, एवं ओकारान्त धातु के बाद 'तहुँ', 'तह', 'तेँ', 'ताथ' पुरुषानुसार लगाने से हेतुहेतुमद्भूत के रूप बनाये

जाते हैं। जैसे - 'सुन' (सुनना) धातु से सुनितहुँ, 'जा' (जाना) धातु से (ज+इ+तहुँ) = जइतहुँ; अेहिना खइतहुँ, सूतितहुँ; रहितहुँ, (सुनते, जाते, खाते; सोते; रहते) आदि।

किन्तु अन्य पुरुष के निरादरक सूचक रूप में धातु के आगे 'इन' का आगम कर पुँलिङ्ग में 'त' और स्त्रीलिङ्ग में 'ति' का प्रयोग किया जाता है। जैसे - सुनइत (सुनना) सुनइति (सुनती), अबइत (आता), अबइति (आती) आदि।

सामान्य-भविष्यत्

अकारान्त धातु के आगे पहले 'ब' तथा आकारान्त 'वा' ओकरान्त के आगे 'य' वा 'ए' का आगम कर 'ब' प्रत्यय लगा देने से उत्तम तथा आदरसूचक के रूप बनाये जाते हैं। मध्यम पुरुष के अनादर सूचक में 'ब' के बदले 'बह', एवं 'बेँ' अन्य पुरुष के आदर सूचक में 'ताह', और अन्य पुरुष के अनादर सूचक में 'त' प्रत्यय लगाया जाता है। अन्य पुरुष के स्त्रीलिङ्ग रूप में 'तीह', तथा 'ति' के प्रयोग होते हैं। यथाः-

हम पढ़ब (मैं पढ़ूँगा), अपने/अहाँ पढ़ब, (आप पढ़ेंगे), तोँ पढ़बह (तुम पढ़ोगे), ओ पढ़ताह (वे पढ़ेंगे), ओ पढ़त (वह पढ़ेगा)।

किन्तु, 'पिब' (पीना) धातु से पीब, 'द' (देना) से देब, 'ल' (लेना) से लेब, 'पक' (पकना) से पाकब आदि कई एक अपवाद हैं।

सम्भाव्य भविष्यत्

धातु के क्रियाद्योतक रूप के बाद 'रह' धातु का समान्य भविष्यत् रूप यथापुरुष लगाने से सम्भाव्यभविष्यत् के रूप बनाये जाते हैं। यथाः-

हम पढ़इत (पढ़ैत) रहब (मैं पढ़ता रहूँगा, या हम पढ़ते रहेंगे)।
अपने/अहाँ पढ़इत रहव (आप पढ़ते रहेंगे)।
तोँ पढ़इत रहबह (तुम पढ़ते रहोगे)।
तोँ पढ़इत रहबेँ (तू पढ़ता रहेगा)।
ओ पढ़इत रहताह (वे पढ़ते रहेंगे)।
ओ पढ़इत रहत (वह पढ़ता रहेगा) आदि।

विधि

यदि अकारान्त धातु हो, तो उत्तम पुरुष और आदर सूचक मध्यम पुरुष के रूप में धातु के अन्तिम स्वर का लोप होकर 'इ' या 'ऊ' प्रत्यय लगया जाता है ; जैसे - 'कर' (करना) से करी, या करू (करें), 'धर' (रखना) से 'धरी' या 'धरू' (रखें)।

यदि धातु आकारान्त वा ओकारान्त हो, तो उपरोक्त दोनों पुरुष में अन्त का स्वर लोप कर ह्स्व 'इ' या 'उ' लगा दिया जाता है। जैसे- 'जा' (जाना) से 'जाइ' या 'जाउ' (जायँ)।

किन्तु, धातु चाहे अकरान्त हो या आकारान्त, या और कुछ, मध्यम पुरुष के अनादर सूचक में केवल 'ह' या केवल धातु मात्र; अन्य पुरुष के आदर सूचक में 'थि' या 'थु' तथा अन्य पुरुष अनादर सूचक में 'य' का प्रयोग साधारणतया देखा जाता है। उदाहरणार्थः-

हम पढ़ू, पढ़ी (मैं पढ़ूँ, या हम पढ़ें)।
अपने/अहाँ पढ़ू, पढ़ी (आप पढ़ें)।
तोँ पढ़ह (तुम पढ़ो)। तोँ पढ़ (तू पढ़)।
ओ पढ़थि, पढ़थु (वे पढ़ें)। ओ पढ़य (वह पढ़े)।

नोटः- 'पिबं' (पीना) से 'पीबू', 'द' (देना) से 'दिय', 'ले' (लेना) से 'लिय' आदि अनेकों अपवाद तथा अनेकों नियमोपनियम हैं, जो स्थानाभाव से इस प्रारम्भिक पुस्तक में नहीं दिये गये हैं।

पूर्वकालिक

यदि अकारान्त धातु रहे, तो उसके अन्तिम अक्षर के अन्त स्वर का लोप कर इसमें ह्स्व 'इ' लगा देने से पूर्वकालिक क्रिया का रूप बनाया जाता है। जैसे - 'पढ़'(पढ़ना) से 'पढ़ि' (पढ़ कर), 'बस' (बसना) से 'बसि' (बस कर) आदि। कभी कभी 'इ' कारान्त पूर्वकालिक रूप के बाद भी 'क' (करना) धातु का पूर्वकालिक 'कय' (कर) जोड़ दिया जाता है, जैसे- 'पढ़ि', अथवा 'पढ़ि कय' (पढ़कर)।

यदि धातु आकारान्त हो, तो धातु के आगे 'य' प्रत्यय लगा दिया जाता है, जैसे- 'जा' (जाना) धातु से जा+य = जाय (जाकर), 'खा' (खाना) धातु से खा+य = खाय, (खाकर) वा खाय कय।

कहीं-कहीं अकारान्त धातु के आदि अक्षर के स्वर को दीर्घ करने के बाद धातु में प्रत्यय लगया जाता है, जैसे- 'अब' (आना) धातु में, पहले 'अब' से 'आब' बनाया गया, और तब 'आव' में 'ब' को 'बि' रूप देकर 'आबि' (आकर) शब्द बनाया गया। वैसे ही 'पब'(पाना) से 'पाबि' (पाकर) रूप हुआ है।

जिस धातु के प्रथम अक्षर में ह्स्व 'इ' हो, वह दीर्घ हो जाती है, जैसे- 'पिब' (पीना) से 'पीबि', 'लिख' (लिखना) से 'लीखि' आदि-आदि।

किन्तु इस प्रकरण में भी 'द' (देना) से 'दय', 'ल' (लेना) से 'लय', 'हो' (होना) से 'भय', आदि कितने ही अपवाद हैं।

क्रियाद्योतक

साधारणतया धातु के बाद 'इ' का आगम कर, उसके बाद 'त' प्रत्यय लगाने से धातु का क्रियाद्योतक रूप बनया जाता है, जैसेः कर (करना)+इ+त= करइत (करता हुआ), मर (मरना)+इ+त=मरइत(मरता हुआ), चल(चलना) +इ+त =चलइत(चलता हुआ)।

वैसे ही, जाइत (जाता हुआ), होइत (होता हुआ), कनइत(रोता हुआ), सुतइत (सोता हुआ) रूप बनाये जाते हैं।

किन्तु, मैथिली साहित्य में इन दिनों करइत आदि शब्दों के अपभ्रंशात्मक रूप में 'करैत', 'मरैत', 'चलैत', 'ह्वैत', 'कनैत', 'सुतैत' लिखने का व्यवहार भी शुद्ध माना जाता है।

कर्मवाचक

धातु के सामान्यभूत का रूप यदि किसी संज्ञा के विशेषण रूप में व्यवहृत हो, तो वह रूप कर्मवाचक कहलाता है। जैसे- पढ़ल ग्रन्थ (पढ़ा हुआ ग्रन्थ), देखल स्वप्न (देखा हुआ स्वप्न), मुइल व्यक्ति(मरा हुआ व्यक्ति) आदि।

कर्मवाचक शब्द को स्त्रीलिङ्ग बनाने में शब्द के अन्तिम स्वर का लोप कर 'इ' का आगम कर दिया जाता है, जैसे- मुइलि स्त्री (मरी हुई स्त्री), पढ़लि बालिका (पढ़ी हुई बालिका) आदि।

प्रेरणार्थक

प्रेरणा करने पर अकर्मक से सकर्मक और सकर्मक से प्रेरणार्थक रूप बनाये जाते हैं। इसका साधारण नियम यही है कि अकर्मक क्रिया के साधारण रूप के 'ब' के पूर्व 'आय' जोड़ देने से सकर्मक और 'बाय' जोड़ देने से प्रेरणार्थक क्रिया के रूप बनाये जाते हैं। उदाहरणार्थः-

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
चलब(चलना)	चलायब (चलाना)	चलबायब (चलबाना)
उठब (उठना)	उठायब (उठाना)	उठवायब (उठवाना)
दौड़ब (दौड़ना)	दोड़ायब(दौड़ाना)	दौड़बायब (दौड़वाना)
चढ़ब (चढ़ना)	चढ़ायब (चढ़ाना)	चढ़बायब (चढ़वाना)

किन्तु यदि क्रिया के पूर्व स्वर का रूप दीर्घ हो, तो उसका ह्रस्व हो जाता है; जैसेः-

सूतब (सोना)	सुतायब (सुलाना)	सुतबायब (सुलवाना)
घूमब (घूमना)	घुमायब (घुमाना)	घुमबायब (घुमवाना)
जागब (जागना)	जगाय (जगाना)	जगबायब (जगवाना)

नोटः- 1. सकर्मक से अकर्मक नहीं बनाये जा सकते। 2. 'जा' और 'अब' धातु के प्रेरणार्थक रूप नहीं होते। 3. सकर्मक से द्विकर्मक और द्विकर्मक से प्रेरणार्थक बनाने में भी ऊपर कहे गये नियम ही लागू होते हैं; जैसेः-

सकर्मक	द्विकर्मक	प्रेरणार्थक
देखब(देखना)	देखायब(दिखना)	देखबायब(दिखलाना)
पूजब(पूजना)	पुजायब(पुजाना)	पुजबायब(पुजबाना)
छोड़ब(छोड़ना)	छोड़ायब(छुड़ाना)	छोड़बायब(छुड़बाना)

नोटः- 'यब' के बदले 'एव' लिखने का भी व्यवहार मैथिली में प्रचलित है, जैसे चलायब, या चलाएब आदि।

नाम धातु

जो क्रिया संज्ञा से बनाई जाती है उसे नामधातु की क्रिया कहते हैं। साधारणतः संज्ञा का दीर्घस्वर को पहले ह्रस्व में परिणत कर दिया जाता है और बाद उसके 'आयब' या 'आएब' लगाकर नामधातु का रूप बनाया जाता है; जैसेः-

संज्ञा	नामधातु
छाती (हृदय)	छतिआयब (हृदय लगाना)
लाठी (लाठी)	लठिआयब (लाठी से मारना)
जूता (जूता)	जुतिआएब (जूता से मारना)
लात(पैर)	लतिआएब (पैर से मारना)
हाथ(हाथ)	हथिआएब (हाथ में कोई चीज ले लेना)
माँटि (मिट्टी)	मटिआएब (माँटी से छिपा देना/ मिट्टीसे हाथ धोना)
बात(बात)	बतिआएब (बातचीत करना)

इसी प्रकार 'पतिआएब' (विश्वास करना), 'सुटिआएब' (किसी के आगे पीछे करना), 'मुकिआएब' (मुक्के से मारना), 'डेँगाएब' (डाँग, अर्थात् डण्डे से मारना)

'खिसिआएब' (क्रुद्ध होना), 'फुसिआएब' (ठगना), 'लुलुआएब' (ललकारना), 'रिसिआएब' (क्रोधित होना), 'अगुताएब' (जल्दीवाजी करना), 'विधुआएब' (भोंचक रह जाना) 'टिटिआएव' (चिल्लाना), 'मेमिआएब' (मेँ मेँ करना जानवर के लिये), 'पोँ पिआएब' (मोटर, एवं बाजे आदि का 'पोँ पोँ' शब्द करना), 'धुधुआएब' (धु धु करना - आग आदि के लिये), 'फिफिआएब' (हैरान होना), 'पटिआएब' (किसी को फुसला कर अपने वश में कर लेना), 'कुरुकुराएब' (कुरकुर शब्द करना, या मन ही मन अप्रसन्न होना) आदि-आदि।

नोटः- नाम धातु के प्रयोग मैथिली में बहुत पाये जाते हैं, और कितने ऐसे भी प्रयोग हैं जो केवल क्रियारूप में ही विशेष रूप से प्रचलित हैं, और संज्ञा के अर्थ से क्रिया बनने पर अर्थ में कुछ और ही विशिष्टता एवं विभिन्नता ले आते हैं। अतएव, इस प्रकरण में कोई खास नियम नहीं दिया जा सकता है।

यौगिक-क्रिया

दो या दो से अधिक भिन्न-भिन्न धातुओं को मिलाकर जब एक क्रिया बनाते हैं वो वह यौगिक-क्रिया कहलाती है। साधारणतः यौगिक क्रिया के चार स्थूल भेद निर्द्धारित किये जा सकते हैं; जैसेः- 1. सकर्मक+सकर्मक 2. सकर्मक+अकर्मक 3. अकर्मक+ सकर्मक, एवं 4. अकर्मक+अकर्मक।

अब उपरोक्त किसी विधि से बने यौगिक क्रियाओं को हम भले ही दो प्रमुख भागों में बाँट सकते हैं। यथा - 1. जिसमें पहले की क्रिया धातु के रूप में व्यवहृत होती हो, और 2. जिसमें आदि की क्रिया में सामान्य भूत का रूप दिया जाय।

प्रथम भाग के शब्दों के नियम अनेकों हैं, जिनसे (1) अवधारणबोधक, (2) पूर्णताबोधक, (3) अवकाशबोधक, (4) आरम्भबोधक, (5) इच्छाबोधक, एवं (6) शक्तिबोधक आदि कईएक प्रकार की यौगिक क्रियायें बनाई जाती हैं, और दूसरे भाग के शब्द में केवल सामान्य भूतकालिक शब्द के आगे 'करब' लगा कर यौगिक शब्द बनाये जाते हैं। किन्तु उन नियमोपनियमों का यहाँ कुछ विशेष विवरण नहीं देकर केवल नीचे कुछ यौगिक क्रियाओं के रूप मात्र दे दिये जाते हैं, जिनसे यह स्पष्ट हो जायगा कि यौगिक क्रिया के प्रथम दो रूपों में साधारणतया पहिले धातु में पूर्वकालिक क्रिया का ही रूप दिया जाता है। स्मरण रखना चाहिये कि यौगिक क्रिया के रूप सामान्य क्रियाओं के रूप के समान ही सभी काल एवं सभी पुरुष में व्यवहृत किये जाते हैं।

(1) अवधारणबोधक :- कुछ यौगिक क्रियायें हैं - कय लेब (कर लेना), हँसि देब (हँस देना), सूति रहब(सो जाना), मारि बैसब, मारि देब (मार देना), लूटि लेब (लूट लेना), बाजि उठब (बोल उठना), राखि देब (रख देना) आदि।

(2) पूर्णताबोधक :- कहि चुकब(कह चुकना), हारि चुकब (पराजित हो चुकना), चलि चुकब (रवाना हो जाना) आदि।

(3) अवकाशबोधक :- बाजव देव (बोलने देना), खाय पाएब(भोजन कर पाना), सूतय पायब (सो सकना) आदि।

(4) आरम्भबोधक :- कहय लागब (कहने लगना), सूतय लागब (सोने लगना), कानय लागब (रोने लगना) आदि।

(5) इच्छाबोधक :- पढ़य चाहब (पढ़ने की इच्छा करना), सूतय चाहब(सोने की इच्छा करना), चलय चाहब (चलने की इच्छा करना) आदि।

(6) शक्तिबोधक :- मारि सकब (मार सकना), चलि सकब (चल सकना), खाय सकब (खा सकना) आदि।

दूसरे भाग के यौगिक क्रियाओं के कुछ रूप ये हैं - दौड़ल करब (दौड़ते रहना), आयल करब (आते रहना), गेल करब (जाते रहना), सूतल करब (सोते रहना) आदि-आदि।

फलतः यौगिक क्रिया बनाने के कुछ संक्षिप्त नियम इस तरह दिये जात सकते हैं; जैसेः-

1. अवधारणाबोधक यौगिक क्रिया बनाने के लिये धातु के अन्त्य-स्वर को 'इ' में बदले लें और उसके आगे 'लेब', 'आयब', 'पड़ब', 'जायब' (ए), बैसब, रहब, आदि शब्द यथा-समावेश लगा दिया करें।

2. पूर्णताबोधक क्रिया बनाने के लिये धातु के अन्त्य-स्वर का पहले 'इ' में बदल लें, और उसके बाद 'चुकब' शब्द लगा दें।

3. अवकाशबोधक क्रिया बनाने के लिये धातु के आगे 'य' लगा दें, और उसके बाद पाएब (वा पायब) वा देब यथा - समावेश जोड़ दिया करें।

4. आरम्भबोधक क्रिया बनाने में धातु के आगे 'य' और उसके बाद 'लागब' लगा देने से काम चल जाता है।

5. इच्छाबोधक क्रिया बनाने के लिये धातु के आगे 'य' लगाकर उसके बाद 'चाहब' शब्द का प्रयोग कर देना चाहिये।

6. शक्तिबोधक क्रिया बनाने में धातु के अन्त्य-स्वर को 'इ' में परिणत कर उसके बाद 'सकब' शब्द का प्रयोग कर देने से अर्थ निकल जाता है।

इन नियमों के उदाहरण पहले ही दिये जा चुके हैं।

वाच्य

वाच्य मैथिली में भी तीन प्रकार के होते हैं, यथाः- (1) कर्तृवाच्य, (2) कर्मवाच्य एवं, (3) भाववाच्य

सकर्मक क्रिया से कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य बनते हैं, तथा अकर्मक क्रिया से कर्तृवाच्य और भाववाच्य बनाये जाते हैं।

वाच्य परिवर्तन के नियम हिन्दी एवं मैथिली में करीब-करीब समान ही रूप से संस्कृत व्याकरण के आधार पर पाये जाते हैं; तब भी मैथिली में विविध वाच्यों के कुछ उल्लेख संक्षिप्त रूप से कर दिये हैं।

1. जिस वाच्य में कर्त्ता प्रधान हो और क्रिया कर्त्ता के अनुसार हो, वह कर्तृवाच्य कहलाता है; जैसे -

हम जाइत छी (मैं जाता हूँ)।
लीला जाइति छथि(लीला जाती है)।

2. कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार ही रहा करती है, जैसे -

पापसँ पृथ्वी भयभीत भय गेलि छथि (पाप से पृथ्वी त्रस्त हो गई है।)

3. जिसमें भाव प्रधान हो, भाववाच्य कहलाता है; जैसे -

हमरासँ हँसल नहि गेल (हम से हँसा नहि जा सका)

वाच्य परिवर्तन के कुछ स्थूल नियम ये हैं : -

1. कर्तृवाच्य में जो कर्म रहता है, वही कर्मवाच्य में जाकर कर्त्ता का रूप धारण कर लेता है। और कर्तृवाच्य के कर्त्ता के आगे कर्मवाच्य में करण चिह्न 'सँ' लग जाता है; जैसे -

क. पाप पृथ्वीकेँ त्रस्त कय रहल अछि (कर्तृवाच्य)।
ख. पापसँ पृथ्वी त्रस्त भय गेलि छथि।

2. भाववाच्य में संज्ञा अथवा सर्वनाम कर्त्ता, करणकारक के रूप में परिणत कर दिया जाता, जैसे -

1. हम पढ़लहुँ (मैं पढ़ा)।
2. हमरा सँ पढ़ना गेल (हम से पढ़ा गया)।

अव्यय

जिस शब्द के रूप में लिङ्ग, वचन, अथवा पुरुष के अनुसार कुछ भेद अथवा विकार नहीं होता, उसे अव्यय कहते हैं। अव्यय के मुख्य पाँच भेद हैं -

1. क्रिया विशेषण,
2. सम्बन्धवाचक
3. समुच्चयबोधक,
4. विस्मयादिबोधक, एवं
5. उपसर्ग।

क्रिया विशेषण के मुख्य चार भेद हैं - क. कालवाचक, यथा - एखन (अब), तखन (तब), ऐखन (अभी), तैखन (तभी), जखन (जब), जहिखन (जभी) आइ, आज (आज), एखन धरि (अबतक), तखन धरि (तब तक), ऐखन धरि (अभी तक), तैखन धरि (तभी तक), काल्हि (कल्ह), परसू (परसों), भोर भिनसर, प्रात (सुवह), साँझ (सायंकाल), सवेरे (सुवह), सकाल (शीघ्र), सवेरे-सकाल (शीघ्रता से), पहिने (पहले), पहिनहि (पहले ही), पाछू (पीछे), सदा-सर्वदा (सर्वदा), नित्यप्रति, प्रतिदिन (प्रतिदिन) आदि-आदि।

ख. स्थानवाचक - कतय (कहाँ), जतय (जहाँ), ततय (तहाँ), एतय (यहाँ), ओतय (वहाँ), कहाँ (कहाँ), जहाँ-तहाँ (जहाँ-तहाँ), जतय-ततय (जहीं तहीं), एम्हर (इधर), तेम्हर (तिधर), ओम्हर (उधर), केम्हर (किधर), निकट, लग, समीप (समीप), कात (बगल), आगू (आगे), पाछू (पीछा), दिशि (ओरल, तरफ (तरफ) माँझ, बीच, मध्य (बीच) आदि।

ग. परिणामवाचक - अति, अत्यन्त, अधिक, असीम, बहुत (बहुत), अल्प, थोड़, कम, कनेक, थोड़ेक (कम), एक बेरि (एकवार), दुइ बेरि (दोवार), कइ बेरि (कईएक वार), ततेक (तितना), जतेक (जितना), ओतेक (उतना), ढ़ेर (ढ़ेर) आदि।

घ. भाववाचक - हँ (हाँ), नहि (नहीं), केवल (केवल), बृथा, व्यर्थ, बेकार, नाहक, निरर्थक (बृथा), ऐना (इस प्रकार), ओना (उस प्रकार), जेना (जिस प्रकार), तेना (तिस प्रकार), कोना (किस प्रकार), मुदा (किन्तु), परन्तु (परन्तु), भने (अच्छी तरह से), बरु (बेहतर), आदि।

2. जो एक वाक्य का दूसरे वाक्य से सम्बन्ध निर्धारित करे, उसे सम्बन्धवाचक अव्यय कहते हैं। जैसे -

ओ जे कहलक से ठीक थीक थिक (उसने जो कुछ कहा वह ठीक है)।

यहाँ 'जे' 'से' को सम्बन्धवाचक अव्यय कह सकते हैं। वैसे ही जो, किसी वाक्य में एक पद से दूसरे पदको समन्वित करे, उसे भी सम्बन्धसूचक अव्यय कह सकते हैं, जैसे - रहित, सहित, सङ्ग, उपर, नीचा आदि।

3. वह शब्द जो एक पद से दूसरे पद का 1 संयोग, अथवा 2 वियोग करबा सके, उसे सम्मुचयबोधक अव्यय कहते हैं।

1. संयोजक : आओर, और (और), तथा ओ, एवं (तथा और एवं) आदि।

2. विभाजक : वा (या), अथवा (अथवा), नहि तँ (नहीं तो) आदि।

4. जिन शब्दों से हर्ष-शोक आदि भाव प्रकट किये जाँय उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे : वाह! वाह! हा! हाय! हाय! धन्य! खूब! हन्त! वाह! चावस! त्राहि! त्राहि!! छीः छी! आदि। हिन्दी एवं मैथिली में उपरोक्त शब्द समान अर्थ में ही व्यवहृत होते हैं।

5. प्र, परा, सम्, निर, अति, दुर, उप, अ, अन् आदि उपसर्ग हिन्दी के समान ही मैथिली में भी संज्ञा, तथा धातु के पूर्व लगाये जाते हैं। जैसे दुर+लभ = दुर्लभ, उप+ वन = उपवन, अनु+चर = अनुचर, अन +आदर = अनादर आदि आदि।

कृदन्त

क्रिया के बाद प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते, उन्हें कृदन्त कहते हैं। मैथिली साहित्य में कृदन्त एक विशेष स्थान रखता है। इसीलिए यहाँ उन प्रमुख प्रत्ययों का उदाहरण सहित नामोल्लेख किया जाता है; जिनसे पाठकों को अन्यान्य शब्दों में भी निम्नोक्त प्रत्ययों का प्रयोग स्वयं करने की सुविधा हो सके। प्रत्यय ये हैं–

(क) कर्त्ता के अर्थ में ''हार'' प्रत्यय का उपयोग किया जाता है, जैसे; लेनिहार(लेने वाला), देनिहार(देने वाला), बजनिहार(बोलने वाला), पढ़निहार(पढ़नेवाला), लिखनिहार(लिखने वाला), सुतनिहार(सोने वाला), गेनिहार(जाने वाला), खेनिहार(खाने वाला) आदि-आदि।

नोटः- उपरोक्त उदाहरणों से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि 'हार' प्रत्यय लगाने के पहले धातु के बाद 'इ' का आदेश कर दिया जाता है। पाठक इस बात पर अवश्य ध्यान रखें।

(ख) ''उआ''ः- बनउआ (बनाया हुआ या बनाने वाला), बिकउआ (बेचा हुआ या बेचने वाला), चढ़उआ (अर्पित किया हुआ, या अर्पण करने वाला), आदि-आदि।

(ग) 'इया'ः- गबैया (गाने वाला), रबइया (कहने वाला; संकेत करने वाला), खबइया (खाने वाला), देबइया (देने वाला) आदि-आदि।

(घ) ''ऐत''ः- फनैत (कूदने वाला), उठैत (उठता हुआ), बैसैत (बैठता हुआ), चलैत-फिरैत (चलता-फिरता हुआ), हँसैत-बजैत (हँसता-बोलता हुआ), कनैत-खिजैत (रोता कलपता हुआ); डकैत (डाका मारने वाला), बजैत (ज्यादा बोलने वाला) आदि-आदि।

(2) भाव अर्थ में–

(क) 'बाहि' जैसे :- हरबाहि (हल चलाना), चरबाहि (पशु चराना), कोदरबाहि (कुदाली चलाना)।

(ख) ता, न्त, जैसे :- चलता, चलन्त (चलने वाला), फिरता फिरन्त (फिरने वाला), बहता, बहन्त (बहता हुआ), घटता, घटन्त (घटता हुआ)।

(ग) ती, न्ती जैसेः- चलती, चलन्ती; फिरती, फिरन्ती; बहती, बहन्ती; घटती, घटन्ती (स्त्रीलिंग में)।

(घ) 'नाइ' जैसेः- पढ़नाइ (पढ़ना), खयनाइ (खाना), सुतनाइ (सोना), लिखनाइ (लिखना), चलनाइ-फिरनाइ (चलन-फिरना), दौड़नाइ-धुपनाइ (दौड़ना-धूपना), खेलनाइ-कुदनाइ (खेलना-कूदना), लेनाइ-देनाइ (लेना-देना), बजनाइ-झुकनाइ (बोलना-भौंकना), हँसनाइ-गउनाइ (हँसना-गाना), सिखनाइ (सीखना), गेनाइ(जाना), उठनाइ (उठना), बचनाइ (बच जाना), मुइनाइ (मर जाना), जीनाइ (जीना), कननाइ (रोना), फुलनाइ (फूल उठना), फननाइ (कूदना) आदि-आदि।

(ङ) ''ब'' जैसेः- पढ़ब(पढ़ना), लिखब(लिखना), बाजब (बोलना), सूतब (सोना), हँसब (हँसना), रहब (रहना), जनमब (जन्म लेना), मरब (मरना), विहुँसब (विहुँसना), चलब-फिरब (चलना-फिरना), लड़ब-झगड़ब (लड़ना-झगड़ना), उठब-बैसब (उठना-बैठना), जागब (जागना), रहब (रहना) सहब (सहना), जीब (जीना), सीब (सीना), पीब (पीना), टारब (टालमटोल करना)।

(च) ''न'' जैसे :- लेन-देन (लेना-देना), खाएब-पीयब (खाना-पिना)।

(छ) ''आइ' जैसे :- पढ़ाइ (अध्ययन), लड़ाइ (लड़ाई); उड़ाइ (उड़ान), उतराइ (नीचे आना), चढ़ाइ (ऊपर जाना); कमाइ (कमाना); खटाइ(खटाना); बुनाइ (बुनना); धुनाइ (धुनना); धाआइ (धोना); आदि-आदि।

(ज) ''इ'' जैसे :- मारि (मार); बाढ़ि (बाढ़); गाड़ि (गाली); चालि (चाल); हारि (हार); आदि-आदि।

(3) कर्मवाचक :- ''ल'' जैसे सुनल (सुना हुआ), लिखल (लिखा हुआ), कहल कथा (कही हुई बात); जानल (जाना हुआ, ज्ञात); सहल कष्ट (सहा हुआ कष्ट); बहल (बचा हुआ); भसिआएल (दहाता हुआ) आदि-आदि।

(4) करणवाचक :-

(क) 'नि' जैसे :- बाढ़नि (बढ़नी, झाड़ू), चालनि (चलनी), पावनि (पवनी, त्यौहार) आदि-आदि।

(ख) ''नी'' जैसे :- कतरनी (करतने वाली), नहरनी (जिससे नाखून बनाते हैं), झरनी (जिससे स्त्रियाँ केश झारती हैं); छोलनी (जिससे तवे में तरकारी उलटाते-पुलटाते हैं) आदि-आदि।

इनके अतिरिक्त हिन्दी के समान ही मैथिली में भी संस्कृत के, 'तव्य' 'अनीय', आदि निष्ठा प्रत्ययों से बने शब्दों का अविकल रूप में व्यवहार किया जाता है; जैसेः- कार्य्य, धार्य्य, पठनीय, कर्त्तव्य, दर्शनीय, गन्तव्य, सोचनीय, वर्णनीय, रमणीय, दातव्य, भोक्तव्य, आदि-आदि। अतएव, पाठकगण ऐसे संस्कृत शब्दों का व्यवहार मैथिली में खुशी से कर सकते हैं।

तद्धित

संज्ञा के साथ प्रत्यय लगाकर जो शब्द बनाये जाते हैं उन्हें तद्धित कहते हैं। तद्धित के कुछ प्रमुख प्रत्यय उदाहरण सहित नीचे संक्षिप्त रूप में दिये जा रहे हैं।

(1) भाव अर्थ में

(क) 'पन' जैसेः- नेनपन (लड़कपन), बड़प्पन (बड़प्पन), बतहपन (बतहपन), घतहपन (घतहपन) आदि।

(ख) ''ता'' जैसे :- मूर्खता, विज्ञता, विशिष्टता, सावधानता रोचकता, महत्ता, महानता शिष्टता, इष्टता, विद्वत्ता, विनयशीलता आदि।

(ग) ''बट'' :- सजाबट, बनाबट-दिखाबट आदि-आदि।

(घ) ''त्व'' :- महत्त्व, मनुष्यत्व, पशुत्व, मुर्खत्व आदि।

नोट :- ऊपर 'ख' एवं 'ग' में दिये गये शब्द हिन्दी में भी समान भाव से ही व्यवहृत होते है। अतएव ऐसे शब्दों के अर्थ आगे भी नहीं दिये जायेंगे।

(2) कर्त्ता अर्थ में

(क) 'वाह' जैसेः- हरबाह (हरवाहा), चरबाह (चरवाहा)।

(ख) 'वार' जैसे :- महीसिबार (भैंस चराने वाला), गइबार (गौ चराने वाला) आदि।

(ग) 'धर' जैसे :- जलधर, वेषधर, विषधर, चक्रधर, गदाधर, भूधर, धनुर्धर, आदि। (हिन्दी में भी समान ही रूप में व्यवहृत होते हैं)।

(घ) 'मान' जैसेः- धीमान, ज्ञानमान, बुद्धिमान, आदि।

(ङ) 'वान' जैसे :- गाड़ीवान, एक्कावान, कोचवान, गुणवान आदि।

(च) 'गरी' जैसेः- पुजेगिरी (पूजा करने का काम), देवनगिरी (दीवान का काम), मुनरिगिरी (मुन्शी का काम) आदि।

(छ) 'आर' जैसे :- सोनार, चमार, कुम्हार, कमार आदि।

(ज) ''क'' जैसेः- पाठक, रक्षक, लेखक, उपदेशक, शिक्षक, अनुमोदक आदि।

(झ) ''इञा'' जैसे :- बजनिञा (बाजा बजाने वाला), भजनिञा(भजन करने वाला), पचनिञा (पाच करने वाला), लोकनिञा (साथ चलने वाला, विशेषकर वर-वधू के साथ जाने वाली लौंडी, या पुरुष को लोकनिञा कहते हैं)

(ञ) ''इया'' जैसे :- पमरिया (पमारा गाने वाला), ढोलिया (ढोल बजाने वाला), खाश कर चमार जाति में ही इसका प्रयोग होता है, अन्य जाति के ढोल बजाने वाले व्यक्ति में नहीं) आदि।

(ट) ''ची'' जैसेः- हफीमची (अफीम खाने वाला), मसालची (मसाल जलाने वाला), तबालची (तबला बजाने वाला), खजानची (खजाने की रक्षा करने वाला) आदि।

(ठ) ''लु'' जैसे :- दयालु (दया करने वाला), कृपालु (कृपा करने वाला), आदि।

(ड) 'हार' जैसे :- टिकुलहार (टिकुली, बिन्दी बेचनेवाला), बनिहार (मजदूरी करने वाला), चुल्हार (चूड़ी बेचने वाला), लोहार (लोहे का काम करने वाला), पनिहार (पानी ढोने वाला) आदि।

(3) युक्त अर्थ में

(क) ''गर'' जैसेः- तेलगर (तेल से युक्त), नोनगर (नमक से युक्त), रसगर (रसदार), बोधगर (बुद्धिमान), लूरिगर (शिल्पी), जलगर (जलयुक्त) आदि।

(ख) 'आह' जैसे :- मछाह (जिसे मछली का सम्पर्क रहे, मछाह भोजन) तेलाह (तेल से सम्मिश्रित), पेटाह (बहुत खाने वाला), रोराह (अशान्त स्वभाव का, रूखरा), सनकाह (उदण्ड), बताह (पागल), जिहुलाह (भोजन के लिये लालची) आदि।

(ग) ''औन'' जैसेः- मैघौन (मेघ से युक्त), बिहरौन (तूफान से व्याप्त), जड़ौन (शीत से सार्द्र), करिऔन (थोड़ा काला), ललौन (थोड़ा लाल) आदि।

(4) सम्बन्ध तथा निवास अर्थ मेंः-

(क) 'ई' जैसे :- मद्रासी, अजमेरी, बंगाली, सूरसेनी, बिहारी, गुजराती आदि।

(ख) ''ईय'' जैसेः- स्वर्गीय, युरोपीय, राजकीय, केन्द्रीय, मध्यपुरीय आदि।

(ग) ''आइन'' जैसेः- मछाइन, मछाइन-गन्ध (मछली के ऐसा गन्धवाला), चिरिआइन (मुरदे की दुर्गन्धि की भाँति), हरिआइन (स्वाद का कसैला), बिसाइन (सड़ी हुई चीज की दुर्गन्धि), सड़ाइन (सड़ा हुआ), लोहाइन (लोहे का गन्ध जिसमें आ गया हो) आदि।

(5) निवास अर्थ में

''सार'' जैसेः- हथिसार (हाथी के रहने का घर), घोड़सार (घोड़ा का घर), चटिसार (पाठशाला), कनसार (जहाँ भूजा भूँजा जाता है), कमरसार (जहाँ कमार लकड़ी का काम करता है) आदि।

(6) भाषा अर्थ में :-

''ई'' जैसेः- मैथिली, हिन्दी, भोजपुरी, अङरेजी, मागधी, नेपाली आदि-आदि।

(7) विकार के अर्थ में

''औड़ी'' जैसे :- कुम्हरौड़ी, कचौड़ी, दनौड़ी, तिलौड़ी, अदौड़ी, मुड़ौड़ी, फुलौड़ी, तिसजौड़ी आदि।

एकदरिक्त मैथिली में संस्कृत के अन्यान्य अपत्यादिबोधक प्रत्यय वाले शब्द भी जहाँ-तहाँ व्यवहार में लाये जाते हैं, जैसे शिव से शैव, विष्णु से वैष्णव, मध्य से माध्यम आदि-आदि। आशा है, मैथिली के कुछ प्रारम्भिक ज्ञान हो जाने के बाद पाठकगण स्वयं इन शब्दों का व्यवहार करने लग जायँगे।

समास

समासान्त पदों के व्यवहार में मैथिली भी हिन्दी के समान ही सर्वथा संस्कृत व्याकरण पर निर्भर है। जिन समासान्त पदों का हम हिन्दी में व्यवहार करते हों, उनका व्यवहार मैथिली में भी कर सकते हैं; प्रत्युक्त मैथीली में अर्व्वाचीन हिन्दी की अपेक्षा कहीं अधिक समासान्त पदों के व्यवहार की परिपाटी देखी जाती है। अतएव, यहाँ संक्षेप रूप से ही समास के छः भेदों का सोदाहरण उल्लेख मात्र कर दिया जाता है।

समास के छः भेद हैं; यथाः-

1. तत्पुरुष, 2. कर्मधारय, 3. द्वन्द्व, 4. द्विगु, 5. बहुब्रीहि तथा 6. अव्ययीभाव।

1. तत्पुरुष समास :- दो शब्दों में पहले शब्द का कारक चिन्ह लुप्त कर दिया जाता है, जैसे- धर्मक शाला=धर्मशाला, एवं पाठशाला, बेधशाला, मछहट्टा (मछली की हाट) आदि।

2. कर्मधारय :- जिसमें विशेष्य-विशेषण तथा उपमान उपमेय मिले, जैसे- नीलकमल, चन्द्रमुख आदि।

3. द्वन्द्व :- जिन दो शब्दों के बीच संयोजक अव्यय का लोप हो, जैसे- लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, पान-सुपारी, दहीभात आदि।

4. द्विगु :- जिसमें पहला पद संख्यावाचक हो; जैसे- अष्टपाश, पंचतत्व, त्रिकोण आदि।

5. बहुव्रीहि :- जिसमें दोनों पदों के मिल जाने से अन्य पद की ही प्रधानता हो जाय ; जैसे :- पीताम्बर (पीला है वस्त्र जिसका वह व्यक्ति), दिगम्बर, रक्ताम्बर, षड़ानन(कार्त्तिकेय), चतुर्भुज (भगवान) त्रिनेत्र (महादेव) आदि।

6.अव्ययीभाव :- जिस सामासिक पद में पहला पद अव्यय हो; जैसेः- प्रतिदिन, अनुचर, अतिकाल, परिताप आदि।

विशेष नोट : नञ् समास तत्पुरुष का ही एक भेद है। 'न' अर्थक पद से समासित पद नञ् समास कहलाता है। यदि 'न' के बाद स्वर पड़े तो 'अन' और व्यंजन पड़े तो 'अ' आदेश हो जाता है; न+आदि=अनादि, न+लौकिक= अलौकिक।

वाक्यविचार

वाक्य बनाने के कुछ प्रमुख नियम संक्षिप्त रूप में नीचे दिये जा रहे हैं, यथाः-

1. साधारणतया मैथिली में पहले कर्त्ता, कर्त्ता के बाद कर्म और अन्त में क्रिया का प्रयोग किया जाता है; जैसेः- रघुनाथ पुस्तक पढ़इत (पढ़ैत) छथि (रघुनाथ (कर्त्ता) पुस्तक (कर्म) पढ़इत छथि (क्रिया) पढ़ते हैं)।

2. अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं रहता। अतएव पहले कर्त्ता और बाद उसके क्रिया रहती है, जैसेः- राम कनैत छथि (राम रोते हैं)।

3. कहीं-कहीं भाव या वाक्यांश विशेष पर जोर देने के लिए कर्म ही पहले आ जाता हैः जैसेः- पुस्तक रघुनाथ पढ़ैत छथि, तैं अहाँ कें नहि भेटि सकैछ। (पुस्तक रघुनाथ पढ़ रहे हैं, इसलिये आपको नहीं मिल सकती है)।

4. कर्म और कर्म का अपना-अपना विशेषण ठीक उसके पहले रख दिया जाता है; जैसे- धर्मात्मा व्यक्ति पापी मनुष्य सँ हटले रहइत (रहैत) छथि। (धर्मात्मा व्यक्ति पापी मनुष्य से हटे ही रहते हैं)।

5. किसी भी वाक्य में अन्य सभी कारक कर्त्ता और क्रिया के बीच में ही अपने-अपने विभक्ति चिह्न सहित व्यवहृत होते हैं, जैसेः-राम रावणकें लड़ाइमे स्वयं अपन हाथसँ सीताक हेतु मारलन्हि। (राम ने रावण को लड़ाई में स्वयं अपने हाथ से सीता के लिये मारा)।

6. संख्यावाचक विशेषण अन्य विशेषणों से पहले ही रखे जाते हैं, जैसे- पाँच गोट खूब फुलाएल सुन्दर लाल कमल अवश्य लाबी। (पाँच ठो खूब खिले हुए सुन्दर लाल कमल अवश्य लावें)।

7. साधारणतया क्रिया के लिङ्ग, पुरुष, कर्त्ता के लिङ्ग तथा पुरुष के अनुसार ही रखे जाते हैं। जैसे- राजा जनक मिथिलाक आदर्श राजा छलाह (राजा जनक मिथिला के आदर्श राजा थे)। सीता भारतीय ललना समाजक गौरव थिकीहि (सीता भारतीय ललना समाज का गौरव थीं)। आइ मिथिला शिथिला भय गेल अछि (आज मिथिला शिथिला हो गई है)।

8. कर्त्ता के वचन के अनुसार क्रिया में किसी प्रकार का विकार नहीं होने पाता। जैसे- हम पढ़इत छी (मैं पढ़ता हूँ)। हमरा लोकनि पढ़इत छी (हम लोग पढ़ते हैं)।

9. कर्त्ता के पुरुष के अनुसार ही क्रिया होती है।

जैसे - हम पढ़इत छी (मैं पढ़ता हूँ), अपने/ अहाँ पढ़इत छी (आप पढ़ते हैं)। तोँ पढ़इत छह (तुम पढ़ते हो)। सीता पढ़इति छथि (सीता पढ़ती है)। तोँ पढ़अति छह (तुम पढ़ती हो)। तोँपढ़इति छेँ (तू पढ़ती है) आदि।

10. सकर्मक क्रिया के कर्त्ता के पुरुष के अनुसार क्रिया नहीं होती। मैथिली में कर्म के पुरुष के अनुसार ही क्रिया होती है। यह नियम मैथिली की एक खास विलक्षणता दिखलाता है। जैसे - अहाँ अपन विद्यार्थीकेँ बुझबिऔ जे ओ बदमाशी नहि करै (आप अपने विद्यार्थी को समझा दें कि वह बदमाशी न करे)। हम अपन नौकरकेँ कहलियैक (मैंने अपने नौकर से कहा)। तोँ रामबाबूकेँ कहून्ह जे हमर किताब दय देथि (तुम रामबाबू को कहो कि हमारी किताब दे दें)। यहाँ (1) ''बुझबियौक'' विद्यार्थी के अनुसार अनादर सूचक में (2) ''कहलियैक'' नौकर के अनुसार अनादर सूचक में; एवं (3) ''कहून्ह'' रामबाबू के अनुसार आदर सूचक में व्यवहृत हुआ है।

11. क्रियाविशेषण साधारणतया क्रिया के ठीक पहले रखा जाता है, जैसे - हम नीक जकाँ बूझि गेलहुँ (मैंने अच्छी तरह समझ लिया)।

12. विशेषण का विशेषण अगर क्रियाविशेषण हो, तो वह विशेषण पहले ही रखा जाता है। जैसे- बहुत सुन्दर गान कर्णगोचर भय रहल अछि (बहुत सुन्दर गान कणगोचर हो रहा है)।

13. कहीं-कहीं वाक्यांश विशेष पर जोर देने के लिये क्रिया के बाद भी क्रियाविशेषण का व्यवहार किया जात है, जैसे- कहब तँ बहुत सहज होइछ किन्तु करब होइछ अत्यन्त कठिन (कहना तो बहुत सहज होता है किन्तु करना होता है अत्यन्त कठिन)।

❑

परिशिष्ट

(जहाँ तक सम्भव हो सका है, ''शिक्षक'' के प्रथम भाग में मैथिली के कुछ प्रमुख शब्दों के प्रयोग उदाहरण- रूप में हो ही चुके हैं। एतदरिक्त यहाँ भी कुछ व्यावहारिक शब्द नीचे दिये जा रहे हैं। आशा है, पाठकों को अब मैथिली का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने में बहुत कुछ सहायता मिल सकेगी। –लेखक)

(1) प्रसिद्ध अन्न

धान (धान); जौ, यव (यव), राहड़ि (अरहर), कुरथी (कुलथी), उरीद (उर्द), मूंग, खेरही (मूंग), मकइ (भुट्टा), बदाम (चना), खेसारी (खेसारी), बजरा(बाजरा), तीसी(चिकना), सरसिब (सरसों), रेंची (तोरी), काउन (काउन), साम (समा), जनेर (ज्वार), केराओ (केराव, मटर)।

(2) भोज्य वस्तु

चाउर (चावल), दालि (दाल), तीमन (रसदार तरकारी), तरकारी (तरकारी), सोहारी (पतली रोटी, पूरी), चिकस, आटा (आटा), पूरी, दलिपूरी (दालपूरी), रोट; लिट्ट, लिट्टी (मोटी पूरी), भात (भात); साना (चोखा) सदवद (रसदार तरकारी), दही (दही); दूध(दूध), घी (घी); तेल (तेल); माछ (मछली); माऊंस (मांस), खीर, तस्मै, पायस(पायस), घोरजाउर (दही में पकाया हुआ भात); मसल्ला (मसाला); आमील (आम की खटाई), चटनी (चटनी), अचार (अचार), अम्मट (अमौट); हरदि (हल्दी), आद (अदरख), हींग (हींग); तेरपात (तेजपत्ता), पिआउज (प्याज), लसून (लहसुन), जीर (जीरा), मरीच (गोलमिर्च), मरिचाइ (लाल मिर्च), चीनी, मिसरी, गुड़, शक्कड़(हिन्दी के समान ही), साग-पात (शाक-भांजी), पान (पान), सुपारी, गुआ (सुपारी, कसैली), अरांची (इलायची), लवङ्ग (लौंग), जाफर (जायफल), दालिचीनी (दालचीनी), चून (चूना), खाएर, खैर (कत्था); करपूर (कपूर), तमाकू (तम्बाकू)।

(3) नित्य कृत्य

उठब=उठना; वाह्यभूमि दिशि जाएब, नदी फिरब, पचहर जाएब=पयखाना फिरना; कूड़ूर आचमन करब= कुल्ला आचमन करना; दतमनि करब=दाँत माँजना; नहाएब, स्नान करब= स्नान करना; पूजापाठ करब= पूजापाठ करना; पनपिआइ करब= जलपान

करना; पानगुआ खाएब= पान-सुपारी खाना; किछु काल अपन काज-उदम(कार्य-उद्यम) करब= कुछ काल अपना कार्य-उद्यम करना; फेर भोजन(कलौ) करब=फिर भोजन करना; तखन लघुशंका (लघही) कय कनेको काल वाम करौटे पड़ि रहब= तब पेशाब कर कुछ काल वाम करवट से आराम करना; तदुपरान्त बेरू पहरसँ लय कें राति भोजन करबाक समय तक टहलब-बुलब, गप्प-सप्प करब, अपन काज धन्धा करब, यदि भय सकै तँ किछु अनकहु उपकार कय देब और भोजनोपरान्त पैर-हाथ धोय, ओकरा नीक जकाँ अङ्गोछासँ पोछि, माथ लग जल भरल लोटा टुकनी, एवं पाँजर लग एक बाँसक लाठी राखि, पूब अथवा दक्षिण सिरमे अपन इष्ट देवता एवं अन्यान्य देवादिगणक स्मरण करैत सूति रहब। प्राचीन मैथिल समाजक स्वतन्त्र जीवनक एक दृष्टान्ते मानल जाइत छल= इसके बाद अपराह्नकाल से लेकर रात में भोजन करने के समय तक टहलना फिरना, गप्प करना, अपना काम करना, हो सका तो कुछ दूसरों का भी उपकार कर देना, और भोजन के बाद पैर-हाथ धोकर इन्हें अच्छी तरह तौलिये से पोंछ कर, सिरहाने में जलपूर्ण लोटा-लोटकी एवं बगल में बाँस की लाठी रख कर, पूरब अथवा दक्षिण सिरहाने अपने इष्ट देवता एवं अन्यान्य देवादिगण का स्मरण करते हुए सो जाना, प्राचीन मैथिल समाज के स्वतन्त्र जीवन का एक दृष्टान्त ही माना जाता था।

(4) फल-फूल

आम(आम); कटहर (कटहल); जामु(जामुन बड़ा); जमुनी (जामुन छोटा); सरीफा(शरीफा); लताम (अमरूद); नेबो(नीबू); नारिकेर (नारियल); सोहाँस(खीरा); सपेता(सपाटू); सिओ(सेव), केरा(केला), नासपाती(नासपाती), अड़रनेवा(पपीता), आलू(आलू), भाँटा(बैगन), कुमहर(कद्दू), ओल(सूरन), सजमनि(लौका), झिगुंनी(तोरई), रामझिगुंनी(रामतोरई), आउर(पेंची), खमहोउर(फर),सलगम(सलगम), तेतरि(इमली), इलची(लीची), तारभूज(खरबूजा), कदीमा(कोंहड़ा), बैर(बेर), कुसिआर (ऊख), दाड़िम(वेदाना), सन्तोला नेवों (सन्तरा), सीम (सेम), अंगुर, खजुर, बादाम आदि फलों के व्यवहार हिन्दी तथा मैथिली दोनों में अधिकतर तक समान ही रूप पाये जाते हैं।

(5) वृक्ष विशेष

बड़(वड़), पीपर(पीपल), अशोक(अशोक), नीम(नीम), ताड़(तार), बेल(बेल), कदम्ब(कदम्ब),सखुआ(शाल) आदि-आदि।

(6) घरेलू चीजें

सूप(डगरा), डगरी(छोटा डगरा), बारहनि(झाड़ू), उखरि(उखली), समांठ, मूसर(मूसल), चालनि(चलनी), जाँत (बड़ी चक्की), चकरी (छोटी चक्की), खपरि(खपरि), सिलौट(सिल); लोरही(लोढ़ा), पथिया(छिट्टा), मौनी(छोटा छिट्टा; छिट्टा), खुरपी(खुरपी), हाँसू(हँसिआ), कोदारि(कोदाली), कुरहरि(कुल्हाड़ी), तरुआरि(तलवार), चक्कू, छूरी(चक्कू), कैंची(कैंची), सरौता(कसैली काटने का यन्त्र सरौता, संकुल), हर(हल), फार(फाल), पालो(पालो), इत्यादि-इत्यादि।

(7) प्रमुख वस्त्र विशेष

धोती(धोती), पाग(पगड़ी), दोपटा(दुपट्टा), तौनी(चादर), बनिआइन(गंज्जी), मिरजइ, कोट, कमीज, कुरता, हैट; पैंट, टाइ, पायजामा, अचकन आदि हिन्दी मैथिली में एक ही रूप; भगवा, कोपीन(कोपीन), आदि-आदि।

(8) प्रमुख पशुपक्षी

हाथी, घोड़ा, ऊँट, सिंह, बाघ, मुर्गा, गिद्ध (हिन्दी में भी ये ही रूप), गाए, गाय(गाय), महीँस (भैंस), बरद(बैल), साँढ़(साँढ़ा), बानर(बन्दर), कुकुर(कुत्ता), हरीन(हिरन), खिखीर(लोमड़ी), मूस(चूहा), खरिया(खरहा), गदहा(गधा), चिलहोरि(चील), माछी(मक्खी), भक्योगनी(भकयोगनी), चूटी(चींटी) पिपरी(पीपली), मोँस, मच्छर(मच्छड़), बीछ(बिच्छी), उड़ीस(खटमल), मधुमाँछी (मधुमक्खी), सूगा(सूग्गा,सुआ,सुक), पौड़की(पणडुक), पड़वा(कबूतर), सितुआ(सीप), गीदड़(श्रृगाल, सियार), भालु(भालु), छुछुन्नरि (छछुन्दर) एतरक्ति अन्यान्य जीवों के ठेठ मैथिली नाम नहीं ज्ञात रहने पर शुद्ध संस्कृत शब्द के भी प्रयोग निस्संकोच रूप से किये जाते हैं, जैसे भ्रमर (भँवरा, भौरा), जगदम्बा(पक्षी विशेष), काक(कौआ), आदि-आदि।

(9) कुछ काम की चीजें

जूता, छाता, छड़ी, कलम, चश्मा, घड़ी, पेन्सिल, कागज; टेबुल, कुर्सी, बैंच, कम्बल, दरी, चटाइ, गद्दी, आलमारी (मैथिली अलमारी), लालटेन (लालटेम), डेस्क, पंखा, बीयनि (बाँस का बना) आदि मैथिली में भी अविकल रूप से ही व्यवहार में लाये जाते हैं। वैसे ही था— बाटी, लोटा, गिलास, लोहिआ, बट्टुक, तसला, करछु (हिन्दी करछू) झाँझ आदि

कतिपय शब्द भी हिन्दी एवं मैथिली दोनों में समान रूप से ही व्यवहृत होते हैं। हाँ जो भी भिन्न हैं उनमें से कुछ प्रमुख ये हैं—मोसि(रोशनाई), पोथी, पुस्तक(पुस्तक); दुआइत(दावात), सिलेट(स्लेट), नीव(निव), ककवा(कंघी), एना(आइना), बुताम(बटन), खराम(खड़ाऊँ) आदि-आदि।

(10) जाति व्यवसाय विशेष

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, नौआ(हजाम), धोबि(धोबी), गुआर(ग्वाला), भनसिआ (रसोइया, उभयलिङ्ग), वैद्य, डाक्तर, मास्टर, अध्यापक वकील(मैथिली ओकील), किरानी, कोचवान, गाड़ीवान आदि शब्दों में भी कुछ विभिन्नता नहीं है। इस विभाग के अन्यान्य बहुतो शब्द के प्रयोग पुस्तक में पहले ही हो चुके हैं।

(11) प्रमुख अङ्ग-प्रत्यङ्ग

माथ(माथा), सिर(सर), नाक(नाक), मुह(मुँह), जीभ, जीह(जिह्वा), आँखि(आँख), दाँत(दाँत), हाथ(हाथ), पैर(पैर), ललाट(लिलार), भौंह(भौं), कान्ह(कन्धा), हथेली(तरहत्थी), तरबा(तलवा), जाँघ(जङ्घा), गरदनि(गर्दन), आङ्गुर(अङ्गुली) अङ्गुष्ठा, तर्ज्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा), डाँढ़ (कमर), नह(नख), पीठ(पीठ), पेट(पेट); ठेङ्गुन, ठेहून(घुटना), केहुनी(कोहनी), टीक(चोटी) आदि।

(12) समय विशेष

भोर, परात(प्रातःकाल), साँझ, सन्ध्या, राति, रात(सन्ध्या), दिन, घण्टा, ऋतु, वर्ष, पक्ष, मास आदि के रूप मैथिली एवं हिन्दी में एक ही तरह हैं।

(13) कुछ व्यावहारिक मैथिली प्रयोग

भोज-भात (भोजपार्टी), पावनि-तिहार(पर्व त्यौहार), बोल-भरोस(आश्वासन); सश्चमश्च(शान्त), धरी-धोखा(सङ्कोच), लाज-बीज (लज्जा), उद्यम धाम(हलचल), पूजा-पाठ (दैनिक पूजाकर्म), आगि-पानि (आगपानी, प्रकृति), फल-फलहरी(फलमूल), बेठ-बेगारी (मजदूरी), तेल-कूर(तेल-उवटन आदि), बिहारि-वसात(आँधी), पानि-पाथर(पानी पत्थल), अबेर-सबेर(जल्द या देरी से), खेत-पथार अथवा खेती-पथारी(गृहस्थी के काम), नाच-तमाशा (नाच-तमाशा), देश-विदेश(देश-विदेश), काज-तिहार(कर्त्तव्यता), जीब- मरब (जीना-मरना),

पोथी-पतड़ा(शास्त्रीय ग्रन्थ), योग-टोन(तान्त्रिक प्रयोग), नीक- अधलाह (अच्छा-बूरा), कहल-सुनल(कहा-सुना), बिसर-भोर(विस्मरण), नोन-तीमन (नमक, दाल, तरकारी आदि), तीमन-साँजन(दाल, तरकारी आदि), खेती-पथारी(कृषि कर्म), चमक- दमक (चमक-दमक) आदि-आदि।

(14) स्थान विशेष

पोखरि(पोखरा), इनार(कुआँ बड़े आकार में), कूप(कुआँ छोटे आकार में), चर-चाँचर (किसी जमाने का जलाशय जो अब अन्न उपजाने के काम में लाया जाता है), पाँतर (निर्जन, भयावह, स्थान), बाट-घाट(रास्ता), खरिहान(खलिहान), घर(घर), आङन(आँगन), ओसाड़ा(बरामदा), देहरि(देहली), बान्ह(बाँध), खुरुरबट्टी(पगडण्डी), नैहर(स्त्री का जन्म-स्थान), पैतृक(पिता का निवास स्थान), मातृक(ममहर), सासुर(ससुराल) आदि-आदि।

।। समाप्तम् ।।

* श्री जगदम्बायैनमः *

हिन्दी-मैथिली शिक्षक

प्रथम भाग

वर्णमाला परिचय

𑒮𑒱 𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒩 𑒮𑓂𑒞𑒳 = आञ्जी, सिद्धिरस्तु ॥

अकारादि अक्षरों से भी पहले मिथिला में सर्व प्रथम यही सिखलाया जाता है।

स्वर वर्ण

𑒁	𑒂	𑒃	𑒄	𑒅	𑒆	𑒇	𑒈	𑒉	𑒊
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ

𑒋	𑒌	𑒍	𑒎	𑒁𑓀	𑒁𑓁	॥
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	॥

किन्तु व्यञ्जन में संयुक्त होजाने पर मात्राओं के रूप निम्न प्रकार बदल जाते हैं; जैसे:

𑒏	𑒏𑒰	𑒏𑒱	𑒏𑒲	𑒏𑒳 (𑒏𑒳)	𑒏𑒵
क	का	कि	की	कु	कृ

𑒏𑒹	𑒏𑒻	𑒏𑒼	𑒏𑒾	𑒏𑓀	𑒏𑓁	॥
के	कै	को	कौ	कं	कः	॥